मां की मनोकामना

अमरनाथ यात्रा – 2007

हेमराज बंसल

सर्वाधिकार सुरक्षित :हेमराज बंसल

PDF Developed by GB LABS

मां की मनोकामना
अमरनाथ यात्रा – 2007

पावन शिवधाम

अमरनाथ ! जन–जन की आस्था के केन्द्र भगवान शिव का पावन धाम। यहां कौन नहीं जाना चाहता ? वहां तक पहुंचना कोई आसान काम नहीं है। धीरे–धीरे यात्रा सुविधाओं का विस्तार हो रहा है और उसी के साथ वहां जाने वाले भक्तों की संख्या लगातार बढ़ रही है। अमरनाथ गुफा में प्रतिवर्ष प्राकृतिक रूप से बर्फ के शिवलिंग का निर्माण होता है। 15 वर्ष पूर्व जब मात्र एक दिन की ही यात्रा थी तो वहां पहुंचे सभी भक्त शिवलिंग का दर्शन कर अपनी यात्रा को पूर्ण मान लेते थे। आतंकवाद के प्रतिकार में यात्रा का बहुत प्रचार हुआ और भक्तों की संख्या बढ़ती गई। यात्रा की अवधी भी क्रमशः बढ़ती गयी और अब यात्रा दो माह की कर दी गई है। श्रद्धालुओं की संख्या पांच लाख तक पहुंच गई है। 28 जून 2007 से 28 अगस्त 2007 तक यात्रा की तिथि घोषित की गई है लेकिन अब यात्री प्रशासनिक व्यवस्थाओं का इतना मोहताज नहीं रहा है। 28 जून से पूर्व ही लाखों यात्री दर्शन कर चुके थे। वहां व्यवस्थाओं में लगे सुरक्षाकर्मी, प्रशासनिक अधिकारी, लंगर लगा कर सेवा करने वाले सेवादार पहले दर्शन करते हैं फिर अपना काम शुरू करते है। ऐसे में जब 3 जुलाई को ही शिवलिंग पिघल जाने की खबर आई तो मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ।

भोलेनाथ से हर बार माफी मांगता हूं कि आगे से मत बुलाना पर संयोग पांचवी बार यात्रा पर जा रहा हूं। गतवर्ष मां को दर्शन न करा पाने का मुझे मलाल रहा। इस वर्ष मां को दर्शन करा लाने की तीव्र इच्छा थी। थोड़ी मान–मनुहार के बाद जून में मां तैयार हो ही गई। जून के तीसरे सप्ताह में मां के व्रत त्यौहार का हिसाब लगाकर 11, अगस्त 2007 शनिवार रात जम्मूतवी सुपरफास्ट गाड़ी के टिकट कराये। मां व्रत–उपवास बहुत ज्यादा करती है और गतवर्ष मां की यात्रा के दौरान तबियत खराब होने का कारण मैं लगातार आ रहे व्रतों को ही मानता हूं। शरीर श्रम करेगा तो शक्ति भी चाहिये ही। भोलेबाबा भी कहां तक पार लगायेंगे? मैं तो सबसे यही कहता हूं अमरनाथ यात्रा में सिर्फ भोले का ध्यान और कोई पूजा नहीं। कैसे भी करके बाबा के दरबार–गुफा तक पहुंचना ही पहला और आखरी लक्ष्य रख कर चलना चाहिये। 1994 की यात्रा में मेरे जीवन के सब नियम टूट गये थे न? फिर भी मां के व्रत–उपवास की तिथियां देखी। दशमी एकादशी व प्रदोष को टाला तथा उसके आगे का टिकट लेने का निश्चय किया।

जब लगन हो तो साधन स्वयं मिल जाते हैं। कहां तो दो–तीन माह तक रेल में आरक्षण उपलब्ध नहीं और कहां जिस दिन का चाहा उसी दिन का टिकट तुरंत मिल गया। इस वर्ष भी कई लोगों ने मेरे साथ अमरनाथ जाने की अच्छा प्रकट की थी पर मैं सबको टालता रहा था। ज्यादा साथी होने से मेरी आजादी में खलल पड़ता है। मेरे एकमात्र लक्ष्य मेरी मां को अमरनाथ दर्शन करवाने में रुकावट पैदा होती है। हमारे टिकट आने के दो तीन दिन बाद ही हमारे कुंवर साहब महेंद्रजी जैन व बहिन शकुंतला का भी मानस यात्रा जाने का बन गया। भगवान की कृपा से उन्हें हमारे पास की ही शायिकाओं का आरक्षण मिल गया जो उन्होंने कोटा से लिया। हमारा दल चार का हो गया। मुझे कुछ संबल मिला।

यात्रा चिंतन

महेन्द्रजी की अमरनाथ जाने की कोई बीस साल पुरानी इच्छा अब पूरी होने जा रही है। वे बहुत उत्साहित एवं उत्तेजित हैं। इस वर्ष टिकट लेने के बाद उनकी निगाहें अमरनाथजी के समाचारों पर जमी रही। कई बार बर्फबारी व बरसात से रास्ते बंद हुये, कई आतंकवादी घटनायें हुई। हर बार उनका मन विचलित होता और वे मुझे फोन करते। मेरा एक ही जवाब होता हम पहुंच पाये तो ठीक वरना यात्रा रद्ध। इसमें क्या विचार करना है? 30 जुलाई को उन्हें पता लगा कि वहां तो शिवलिंग ही पिघल गया है। कोई कोटा का यात्री यात्रा करके लौटा है, उसने रिपोर्ट दी है। मैंने कहा कि यह समाचार तो एक माह पुराना

है। हम बर्फ के शिवलिंग तो पूरी पहाड़ियों में हजारों देख लेंगे। हम तो उस पवित्र स्थान के दर्शनार्थ जा रहे हैं जहां कभी भगवान शिव एवं मां पार्वती के चरण पड़े थे। साथ ही हम उस महान हिमालय के सौन्दर्य के दर्शन करने जा रहे हैं जहां अनेकों ऋषि मुनियों ने तपस्या कर मोक्ष प्राप्त किया है। झुंझलाहट में एक बार तो कुंवर साहब से मैंने यह भी कह दिया कि यदि आप की इच्छा न हो तो अपना टिकट रद्ध करवा लें, मैं तो जाऊंगा। इसी बीच एक दिन कुंवर साहब के घर कोटा मेरे छोटे भाई दीनू का जाना हुआ। दोनों की वार्ता में उनके दिल में बैठे संशय के बादल छंटे। इसके बाद ही हमने वापसी यात्रा के टिकट करवाये जो 21 अगस्त 07 के हुये। इसके बाद ही हमारी यात्रा तैयारी शुरू हुई।

कोटा से कुंवर सा. ने यात्रा रजिस्ट्रेशन करवाने का बहुत प्रयास किया, जो सफल नहीं हो पाया। सफर के सामान बैग, जूते, रैनकोट आदि खरीदने में भी बहुत चिंतन मनन हुआ। बहिन व कुंवर सा. की सद्इच्छा पैदल ही यात्रा करने की थी जबकि मैं यह मान रहा था कि मां के साथ होते ऐसा संभव नहीं हो पायेगा। वहां टेन्ट, तंबू, रजाइयां किराये की मिल ही जाती है। सारी जानकारी होने के बावजूद हमने बहुत सारा फालतू सामान अपने साथ रखा। कुंवर सा. कोटा के ही एक अमरनाथ रिटर्न यात्री से पूछ कर मुझे बार–बार सलाह दे रहे थे जो मुझे अच्छा नहीं लग रहा था। उन्होंने उसी यात्री से पूछ कर वापसी कार्यक्रम भी तय कर मुझे बता दिया। 'हम पहलगांव से चलेंगें एवं वापस बालटाल से लौटेंगें। सामान जम्मु में छोड़ेंगें आदि।' मैं उनकी बातें सुन कर भी चुप रहता। अमरनाथ यात्रा में हमारे हाथ में क्या रह जाता है?

विदाई

23 जुलाई से मेरा स्वास्थ्य पेट के रास्ते खराब हुआ। सफर पर जाना है यह सोचकर एलोपैथी की भरपूर दवाईयां खाई पर मैं ठीक नहीं हो सका। मुझे बहुत कमजोरी आ गई। रास्ते के लिये बहुत सी दवाइयां भी रखी। 11 अगस्त दोपहर में मैंने कार से सारा सामान व मां को कोटा भेजा। मैं तीन घंटे और व्यापारिक कार्य करने के बाद बस से सायं सात बजे कोटा पहुंचा। कोटा मोबाइल का उपयोग कर कार मंगवाई और दीनू के ससुराल करोड़ीमलजी अग्रवाल के घर पहुंचा। वहां से नाश्ते के बाद विदाई ली। मां व सारा सामान यहीं था। कार से कुंवर सा. के घर पहुंचे। यहां उत्सवी माहौल बना हुआ था। हमारी गाड़ी दस बजे है। तब तक का समय मुझे यहीं गुजारना है। यहां मुझे बीमारी के बावजूद बहुत भारी खाना लेना पड़ा। मेहमाननवाजी का दस्तूर ऐसा ही है। मां ब्याईजी करोड़ीमलजी के यहां ही भोजन करके ही आयी थी। हमने पुनः सामान कम ज्यादा किये। यहां हमारी औपचारिक विदाई हुई। हम चारों यात्रियों को फूलों एवं मोतियों की मालाओं से लादा गया। कुमकुम चावल लगाकर रुपये नारियल भेंट दिये गये। इसके बाद सभी बच्चों ने यात्रियों को ढोक दी। यात्रियों ने बच्चों को आशीश स्वरूप रुपये दिये। मुंह मिठाई व लेनदेन के कार्य के साथ नोंकझोंक व हंसी ठठ्ठा भी होता रहा। बुजुर्गों की नसीहतें भी सुनी। इसी बीच कार लेट होने से कुछ चिंता भी हुई। दरअसल छोटा भाई बबलू (महेश) उसके पुत्र को डाक्टर को दिखाने ले गया था। वहां ज्यादा समय लग ही जाता है। खैर देर आयद दुरूस्त आयद। हम चारों यात्री सामानों सहित साढ़े नौ बजे प्लेटफार्म पर पहुंच गये। हमने कार को तुरंत ही वापस भेज दिया। बबलू को सपरिवार बारां लौटना था। हमें विदा करने मोटर साइकिल से यतीश व पियूष भी प्लेटफार्म पर आये।

रेल्वे के स्वचालित दिशानिर्देशक देखकर हमने सामान बहुत आगे बढ़ा लिया। गाड़ी आने पर हमें वापस दौड़ना पड़ा। मैंने कई बार इंडिकेटर गलत सूचना देते हुये देखे हैं पर कुंवर सा. को रेल्वे की कार्यप्रणाली पर पूरा भरोसा है। यह भरोसा आज कम हो गया। यतीश एवं पियूष की मदद के कारण हमें कठिनाई कम हुई। गाड़ी रवाना होने के बाद हमने विदा देने आये लोगों से हाथ हिलाकर टाटा किया। रेल रवाना होते ही मैने अपने बैगों को चेन ताले से बांध दिया जिसका कोई ज्यादा मतलब भी नहीं था। बैग की चेन खोल कर कोई भी सामान निकाला जा सकता था। मैंने लंबी यात्रा हेतु पेन्ट शर्ट खोलकर पजामा पहन लिया। हमें पूरी रात और पूरा दिन इसी डिब्बे में इसी सीट पर गुजारना है। कोटा प्लेटफार्म पर हमें बरसात मिली थी इसके बावजूद डब्बे में बहुत गर्मी थी। यहां कुवर सा. को एसी कोच याद आया, मैंने भी स्वीकृति दी पर प्रयास किसी ने भी नहीं किया।

सदा की भांति मुझे रेल में नींद नहीं आई। जेब में रखा रुपया, छाती पर रखा मोबाइल तथा गर्मी व मच्छर सभी सताते रहे। अच्छी बात यह थी कि हमारे पास इस एस–4 कोच में चारों शायिकायें नीचे की तथा पास–पास थी। 12.8.2007 रविवार प्रातः रेल में हम जल्दी ही दैनिंदिय कार्यों से निवृत हो आठ बजे नाश्ता करने लगे। दूध के परांठे, सब्जी और अचार। दोपहर में भी हमने यही नाश्ता किया। मेरे बहुत मना करने के बावजूद मां व बहिन दोनों बहुत सारी खाद्य सामग्री भरकर लाई हैं। कोई दो किलो राजगीरे के सागारी लड्डू, चार समय के परांठे व सब्जी, नमकीन–मिठाई, तली हुई चने की दाल, मुंगफली के दाने, काजू; मूंग के लड्डू आदि से थैला भरा है। मेरी इच्छा ताजा खाने की रहती है पर अब ये बेशकीमती परांठे व्यर्थ जायेंगें यह सोचकर खाते रहे।

विनायक धर्मशाला

हम करीब–करीब समय पर पौने चार बजे जम्मूतवी रेल्वे स्टेशन के प्लेटफार्म पर उतर गये। रेल में ही अमरनाथ यात्रा का इच्छुक एक साधु हमारे साथ लग गया। वह यू. पी. का था तथा हम एक दूसरे की भाषा बहुत कम समझ पा रहे थे। जम्मू में कुछ मशक्कत करने के बाद ही मैं उससे पिंड छुड़ा सका। कुंवर सा. के मन में धर्मशाला में रुकने का भाव जान मैने विनायक धर्मशाला जाने के लिये ऑटो करना चाहा पर मैं इसमें सफल नहीं हो सका। आखिर एक मिनी बस में बैठ विक्रम चौक उतरे। वहां से कुछ पैदल चल पूछते हुये विनायक मिश्र धर्मशाला पहुंचे। रघुनाथ मंदिर, हरिओम् भवन, अग्रवाल ध र्मशाला–विवेकानंद चौक एवं इस धर्मशाला के पते हमारे पास लिखे हुये थे। पूर्व यात्रा में मैं अग्रवाल ध र्मशाला में रुका था। नयी जगह देखने के चक्कर में यहां आ गये। इस धर्मशाला में बहुत सारे अम. रनाथ यात्री रुकते हैं क्योंकि यहां से यात्रा प्रस्थान स्थल मौलाना आजाद स्टेडियम पैदल का रास्ता है। यहां सुरक्षा की तगड़ी व्यवस्था है। गेट पर मिट्टी के कट्टे व जाली लगाकर बंकर बनाया हुआ है। पांच जवान राइफल आदि हथियार लिये सन्नद्ध तैनात हैं। मेटल डिक्टेटर से गुजारने के बाद जामा तलाशी देकर एवं सारा सामान खोलकर चेक करने के बाद हमें अंदर जाने दिया गया। पंद्रह मिनट खर्च कर धर्मशाला में घुसे तो दिमाग खराब हो गया।

इस पुरानी जर्जर धर्मशाला में पांच रू. प्रति यात्री की दर से रुकने की व्यवस्था है। सोने के लिये बरामदे व चौक है। बरसते पानी में चौक में सोना संभव नहीं है। बरामदों में पंखों के नीचे की हवादार जगह पूर्व में आये यात्रियों ने बिस्तर लगा कर रोक रखी है। हमने बेहतर व्यवस्था की दृष्टि से 70 रु. देकर एक कमरा खुलवा लिया। कमरे में भी हम नितांत परेशान रहे। गंदगी–धूल हमने स्वयं ने साफ कर सामान डाले। कम प्रकाश का बल्ब तथा बहुत कम हवा देने वाला पुराना सा पंखा लगा है। कुछ मिनटों बाद ही बिजली चली गई और हमें टॉर्च निकालनी पड़ी। यहां से कोई सौ कदम दूर नये जमाने के शौचालय तथा स्नानघर बने हुये हैं। गनीमत है कुछ तो ठीक है। हमारे पास दूसरी व्यवस्था देखने लायक समय नहीं है। हम स्नान से निवृत्त हुये। महिलाओं ने कपड़े भी धो डाले जिन्हें सुखाने हेतु जुगाड़ कर कमरे में ही रस्सी बांधी। अब हमें ब्यालु एवं यात्रा के टिकट तथा रजिस्ट्रेशन की चिंता थी। कुंवर सा. व बहिनजी तो बचे हुये परांठे खाकर काम चलाने के इच्छुक थे पर मैं उन्हें यहां पहुंचने के बाद ताजा खाना खिलाने के मूड में था।

रेल से उतरते ही हमारा खराब समय प्रारम्भ हो गया था। गर्मी, हल्की बारिश, कुली, ऑटो, संग जुड़े बाबा, मिनी बस का सफर, बैटरी डिस्चार्ज हो कर बंद पड़ा हमारा एक मात्र मोबाइल, धर्मशाला और यहां की प्रवेश प्रक्रिया, फिर बिजलीगुल, चिपचिपा पसीना, दिमाग खराब सा हो गया। महिलाओं से पूर्व नहाकर हम दोनों पैदल एम.ए. स्टेडियम चले गये और सब जगह घूम फिर कर यात्रा के बारे में जानकारी ली। यात्रा सुबह चार बजे प्रारम्भ होगी, बसों के टिकट मिल रहे हैं पर हमने नहीं लिये। और कोई बेहतर साधन मिल जाये शायद। रजिस्ट्रेशन पहलगांव में ही होगा। यहां लंगर भी कार्यरत हैं पर उन पर भोजन आठ बजे बाद शुरु होगा। लंगर में रुकने की व्यवस्था नहीं है। यात्री फुटपाथ या बरामदों में

छज्जों के नीचे बैठ अपने को भीगने से बचाने का प्रयास कर रहे हैं। यहां चल टायलेट्स बने हुये हैं। यदि पानी न आये तो यह जगह धर्मशाला से ज्यादा अच्छी है।

'यदि पानी आ गया तो?' यह सवाल मैंने वहां के एक कर्मचारी से पूछ ही लिया।

'मिलेट्री वाले स्टेडियम के अंदर यात्रियों को बैठने की अनुमति दे देते हैं पर तेज बारिश आने पर यात्री वहां भी भीगता ही है।'

सारी जानकारी ले हम वापस लौटे। बरसात तेज होने पर रास्ते में एक अस्थाई काउंटर पर कोई 15 मिनट रुकना पड़ा। धर्मशाला पहुंचते ही कमरे का ताला लगा चारों साथ भोजन की तलाश में निकल पड़े। कीचड़ भरी राहों में बरसते पानी में पैदल चलकर ढाबा ढूंढना। कुछ ढाबों में खाना देर से बनता है, कुछ में बिना प्याज की दाल सब्जी नहीं है।

''अरे! इससे तो पराठें खा लेते वही ठीक था।'' हमने कई बार सोचा।

रघुनाथ मंदिर गेट के पास के एक खराब से होटलवाले ने जैन दाल देना स्वीकार किया और हमने वहीं बैठकर ब्यालू की। मैने ढाबेवाले से अनुरोध कर मेरा मोबाइल चार्ज पर लगवा दिया जिससे हम वापस अपने परिवार से जुड़ सके। सब चिंताओं से मुक्त हो हमने रघुनाथ मंदिर दर्शन का निश्चय किया। मोबाइल व थैला अलग–अलग काउंटर पर जमा कराना पड़ा और सुरक्षा जांच तो तगड़ी हुई ही। सारा मंदिर दर्शन–भ्रमण के बाद कोई एक घंटे में बाहर निकले। अपना सामान मुक्त कराकर एस.टी.डी. की दुकान में घुस गये। कई जगह फोन कर समाचारों का आदान–प्रदान किया। हम थक चुके थे, सुबह जल्दी उठना था, सीधे धर्मशाला आ गये।

हमारी पार्टी में सिर्फ मेरे पास मोबाइल था। कशमीर में सिर्फ सिमकार्ड वाले मोबाइल ही काम करते हैं। आतंकवाद के चलते सरकार ने ऐसी व्यवस्था कर रखी है। कुंवर साहब इसीलिये अपना मा. बाइल नहीं ला सके। मेरा मोबाइल सोते वक्त चालू रह गया होगा शायद इसीलिये उसकी बैटरी समाप्त हो गई। मुझे मोबाइल खराब होने की तथा बैटरी चार्ज करने की सदैव चिंता बनी रही। विनायक धर्मशाला में मैंने मैनेजर के कमरे में मेरा मोबाइल चार्ज किया तथा वहीं रखवाली बैठा रहा। हमारे कमरे में बिजली का प्लग ही नहीं था। यहां नेटवर्क सही न आने के कारण मैं कहीं बात नहीं कर सका। यहां की परेशानियों के चलते कुंवर सा. व मैंने कई बार होटल चलने की आपस में बात की पर अब 6 घंटे ही तो गुजारने हैं ऐसा सोचकर नहीं गये। धर्मशाला की इन अव्यवस्थाओं को भोगना ही हमारे नसीब में लिखा था। कमरे में गर्मी थी तथा हमने हमारे सारे कपड़े भी उसमें सुखा रखे थे इसलिये हमें कमरे में सोना असंभव सा लगा। हमने एक बरामदे में बिस्तर लगाये। कुछ देर बाद बरसात रुक गई तो हम चौक में आ गये जहां बहुत बढ़िया हवा आ रही थी। हमने हमारे चादरें, शाल, बैग, पानी का लौटा, बोतलें आदि जरूरी सामान निकाल कर कमरे में ताला लगा दिया। ऊपर खुला आसमान, खुले दरवाजों से आती ठंडी हवा, हमारी सुरक्षा में खड़े जवान, पर हमें नींद नहीं आई। गर्मी व मच्छरों के अतिरिक्त यहां लगातार हो रहा आवागमन तथा शोर–शराबा इसके बड़े कारण थे। रात के दस बजते–बजते धर्मशाला में पानी भी समाप्त हो गया। न शौचालय में पानी और न ही पीने का पानी। रात में पानी तो चाहिये ही। मैं रात 11 बजे पूछताछ करता हुआ सड़क पार लगे नल से पानी की दोनों बोतल भरकर लाया। पानी मैने सिरहाने छुपाकर रखा क्योंकि यही चीज थी जो चोरी जा सकती थी। धर्मशाला मैनेजर बहुत से यात्रियों को 'पानी नहीं है' कह कर वापस भेजता रहा। मेरे सामने अमरनाथ जाने वाले यात्रियों का एक बड़ा दल यहां रुकने हेतु आया था। उस दल में महिलायें एवं छोटे बच्चे भी थे और सबके सिरों पर सामान लदे थे। मैने उन्हें अग्रवाल धर्मशाला का रास्ता बता दिया था। अग्रवाल धर्मशाला के गेट पर भी हमें भारी भीड़ दिखाई दी थी। मैं चिंतित होता रहा, कहीं इन्हें वहां भी जगह नहीं मिली तो?

धर्मशाला के चौक में अर्द्धनिंद्रित अवस्था में लेटे–लेटे हमें कई यात्रियों की राम कहानियां सुनने को मिल रही थी। मेरे पास बैठा एक व्यक्ति अभी अमरनाथजी की यात्रा करके लौटा है। मैं जानकारी लेने के लिये उससे बतियाने लगा। मेहर जो माताजी के मंदिर के लिये प्रसिद्ध है, का रहने वाला है। लगातार 18 वर्ष से विभिन्न यात्रियों का दल बनाकर अमरनाथजी की यात्रा कर रहा है। मैंने उससे यात्रा व्यवस्थाओं के बारे में पूछा फिर उसे मेरी अमरनाथ यात्रा 1994 पुस्तक भेंट दी।

रात में एक बजे करीब आई तेज बरसात ने चौक में सोये सभी यात्रियों का चैन छीन लिया। हम भी सामान समेट कमरे में भागे। कमरे में पंखा चलाकर दरवाजा खोलकर सोये तो बहुत बढ़िया नींद आई। न गर्मी, न मच्छर, न शोर, हम रात भर चौक में क्यों पड़े रहे? शायद प्रारब्ध ही सब करवा रहा है। ईश्वर हमारी परीक्षा ले रहा है। मैने मोबाइल में तीन बजे का अलार्म भर दिया था पर उससे पहले ही सब उठ गये। अब धर्मशाला में पानी तो है नहीं चलो–एम. ए. स्टेडियम में ही नहायेंगें–धोयेंगे। रात ही हमने ध र्मशाला मैनेजर से सुबह धर्मशाला खुलने का समय पूछा था। उसने बड़ा अहसान जताते हुये कहा था कि रात दस से सुबह पांच तक गेट बंद रहने का समय है पर आपको तो हम जब चाहोगे बाहर निकाल देगें। हम देख रहे हैं धर्मशाला रातभर ही खुली है, मुसाफिर आ जा रहे हैं और मैनेजर बिना कोई रसीद दिये मुसाफिरों से शुल्क इकठ्ठा कर जेब भर रहा है।

कारवां

सामान उठा टहलते से स्टेडियम पहुंचे। वहां गेट पर मेटल डिक्टेटर से गुजारना, जामातलाशी और सामान बिखेरकर देखना सब हुआ। कैमरा व मोबाइल चालू–बंद करके दिखाना पड़ा। महिलाओं की चैकिंग के लिये महिला पुलिस की व्यवस्था थी। अंदर पहुंचने तक हल्की बरसात आने लगी। हमने सामान लंगर के तख्ते के नीचे छिपाकर रखे। आराम से निकाल भी लें और भीगे भी नहीं। स्नानादि से निपटे। मैं आलस्यवश नहीं नहाया। काउंटर पर जाकर बस का टिकट लिया। पीछे की सीटें मिली। लंगर पर चाय वितरण शुरु हो गया पर हम चारों तो चाय पीते ही नहीं। बसें बहुत देर से आई। इससे पूर्व बहुत तेज बरसात आई। हमने सारे सामान एवं स्वयं को लंगर के अंदर छिपाकर भीगने से बचाया। यात्री बहुत कम हैं, कुल तीन बसों की ही बुकिंग हुई है। कुछ यात्री सुपर डीलक्स बसों के टिकट मांग रहे थे पर कुछ यात्रियों के लिये ही तो पूरी बस नहीं लगाई जा सकती। काफी देर तक हंगामें जैसी स्थिति रही। तेज बारिश के दौरान भीगते हुये ही बसों में बैठे। मिलेट्री की गाड़ियों के साये में पूरी सुरक्षा में हमारा कारवां 13 अगस्त 2007 सोमवार को सुबह साढ़े पांच बजे जम्मु से रवाना हुआ। अंधेरे के कारण हम बाहर के दृश्य नहीं देख पा रहे हैं। अभी तक की हमारी यात्रा मेरी सोच के विपरीत कुछ परेशानी वाली रही। इस कन्वे की अपेक्षा मैं निजी वाहनों से बेहतर यात्रा करना पसंद करता हूं। धर्मशाला के बाहर टैक्सी की पूछताछ भी की थी पर कुंवर साहब सुरक्षा के प्रति विशेष चिंतित थे। वे इस व्यवस्था से बहुत प्रसन्न हैं। वी. वी. आई .पी. की तरह हमारे आगे पीछे सेना चल रही है।

बस में हमें नींद के झोंके आते रहे। कुद कस्बे में लगभग दस बजे लंगर पर बस रुकी। दाल रोटी चावल सब्जी से पेट भर गया। कुछ फल–सेव व खीरा भी खरीद कर खाये। पानी की बोतलें भरकर बस में बैठे। बस में लौंग इलायची तथा मीठी गोलियों का सेवन किया। बस में कोई उत्साह का वातावरण नहीं था। भोजन से पूर्व तक हम गर्मी से परेशान थे। कुद के बाद ठंडक आते ही पेट भर जाने के कारण सभी को नींद आने लगी। मैं अपने साथियों को बार–बार पत्नीटॉप के आसपास के सुहाने दृश्य देखने के लिये जगाता रहा। कोई चार घंटे के अविराम सफर के बाद शैतान नाले पर बसें पुनः रोकी गई। यहां बहुत सारे लंगर लगे हुये हैं तथा प्रशासन की ओर से पक्के स्नानघर एवं आधुनिक शौचालय बनाये गये हैं। यहां सफाई हेतु पानी तथा हरिजन कर्मचारी की व्यवस्था भी है। बहिन शकुंतला को बस से उतरते ही उल्टी हो गई। मानवीयकृत कारणों से यहां बदबू बहुत है। लंगर में कुछ खाया भी और एक बोतल शीतलपेय खरीद कर भी पी। अभी हमारा बहुत सफर बाकी है। इसके बाद का सफर बतियाते तथा प्राकृतिक दृश्यों का आनंद लेते हुये कटा क्योंकि अब सब की नींद उड़ चुकी थी।

जवाहरटनल के बाद कश्मीर घाटी में, काजीगुंडा तथा अनंतनाग बस कहीं नहीं रोकी गई। यहां अपेक्षाकृत सुरक्षा बढ़ा दी गई है और बसों को रोकने से मना कर दिया गया है। ऐसे में कई यात्रियों को पेशाब की हाजत के कारण बड़ी परेशानी रही। सुरक्षाबलों के द्वारा मना करने के बावजूद मैंने पहल कर दो बार रास्ते में बस रुकवाई जिससे कई लोग हल्के हो सके। दिन के सफर के दौरान हम यात्री आपस में घुल मिल गये। पेशाब कराने के लिये गाड़ी न रुकने पर लोगों ने तीन चार चुटुकले भी सुना डाले।

पहलगांव से चार किमी पहले नुनवान कैम्प के पास पहुंचने में हमें शाम के पांच बज गये। मैं आगे जाना चाहता था पर कुंवर साहब कैम्पों में ही रुकना चाहते थे। पूर्व में हम दो बार टैक्सी से पहलगांव पहुंचे थे और हम अच्छे होटल ढूंढकर ठहरे थे। बस से उतरने के बाद बहुत भारी सुरक्षा जांच के बाद हमें सारे सामानों सहित मेटल डिक्टेटर से निकाला गया। बसों को पृथक से जांच कर आगे बढ़ाया गया था। ऐसे में हमें कोई 400 मीटर सामान उठाकर पैदल चलना पड़ा। आगे पुनः बस में बैठे और थोड़ा से चलने के बाद नुनवान कैम्प के सामने उतरे। बस चालक द्वारा थोड़ा पहले ही उतार देने के कारण हमें सामानों सहित अपेक्षाकृत ज्यादा दूर चलकर कैम्प के दरवाजे तक पहुंचना पड़ा। पूरी छावनी की तरह सुरक्षित इस कैम्प में हमें एक बहुत छोटे दरवाजे से प्रवेश दिया गया। यहां पुनः भारी जांच पड़ताल हुई। इस यात्रा में यह जांचे बहुत अखर जाती है। विरोध करने पर सुनना पड़ता है, 'यह सब आपकी सुरक्षा के लिये ही तो किया जा रहा है।'

तंबू नगरी

बेस कैम्प में कच्ची सड़कें बनाकर दोनों ओर नालियां बनाई गई है। सड़क के दोनों ओर तंबू लगाकर यह नगरी बसाई गई है। तंबुओं के अंत में बहुत सारे अस्थाई शौचालय तथा स्नानघर बनाये गये है। पानी के नल पर्याप्त संख्या में लगे हुये हैं। दिन में हुई बरसात के कारण यहां कीचड़ सा मचा हुआ है। जल्द ही हमारे से एक तंबू व्यापारी ने संपर्क किया और हमने पलंग वाला तंबू 25 रु. प्रति पलंग में तय कर लिया। तंबू में कुल आठ पलंग लगे थे। चार दूसरे यात्री आ जाते हैं तो ठीक वरना हम तो सबका उपयोग करेगें ही। अभी उजाला है। हमने थोड़ा सा आराम किया फिर काम पर लग गये। गीले कपड़े सुखाये, हाथ मुंह धो तरोताजा हुये और फिर ब्यालु करने लंगरों पर जा पहुंचे। हमारे पास कोटा से लाये आठ परांठे अब भी बच रहे थे जो हमने लंगर में काम करने वाले लड़के को दे दिये। यहां लंगर में खाना देरी से बनता है पर पेट पूजा करने के लिये बहुत से पकवान तैयार थे। मैं बाद में रोटी खा लूंगा पेट भी खराब चल रहा हैं। मैने बहुत कम खाया। बाकी ब्यालू वालों को तो भरपेट खाना ही था। मैने यहां डाक्टर की सलाह से भोजन पचाने वाली गोलियां ली। कैम्प के अंदर मेडिकल स्टोर भी था जहां से मैंने गोलियां खरीद कर खाई।

समय गुजारने के लिये मैं लिद्दर नदी के किनारे और पहलगांव के बाजार में जाना चाहता था पर सुरक्षाकर्मियों ने कैम्प से बाहर जाने की इजाजत नहीं दी। एक जवान से मैंने थोड़ी बहस की तो एक उच्च अधिकारी ने आकर बड़े प्यार से समझाया,

''यहां आप यात्रा पर आये हो फालतू घूमने नहीं। हम इतने लोग आपकी सुरक्षा में लगे है। सबसे अच्छा यही है कि तंबू में जाकर सोओ।''

शायद इन्हीं रोकटोक की वजह से कई अफवाहें उड़ी।

'भारत का स्वतंत्रता दिवस आ रहा है आतंकियों ने वारदात करने की धमकी दी है। प्रशासन कल व परसों यात्रा पर नहीं जाने देगा। जम्मू से अब अगली यात्रियों की गाड़ियां 15 अगस्त के बाद ही पहलगांव आयेंगी। आदि आदि।'

इन सब अफवाहों से यात्रियों के बीच थोड़ा भय का संचार हुआ। कुंवर सा. ने भी सब अफवाहें मेरे को सुनाई और अंत में कहा,

'हम तो यहां आकर फंस गये हैं।'

मैंने कहा, ''फंस नहीं गये। मजा आ गया। हमारी किस्मत खुल गई। मात्र सौ रु. रोज में हम चार प्राणी इस स्वर्ग में वास कर रहे है। इन कश्मीर की घाटियों, इन चिनार की वादियों, हरे भरे पहाड़ों को देखने पूरे विश्व से लाखों रु. खर्च कर करके पर्यटक आते हैं और हजारों रु. रोज खर्च करके यहां ठहरते हैं और हम तो मुफ्त में ही इन नजारों और इस मौसम का आनंद ले रहे हैं।'' मेरे मन में भय तो कहीं था ही नहीं।

नुनवान के तंबू में मुझे मोबाइल चार्ज करने का प्लग मिल गया। आगे ऐसी सुविधा शायद ही मिले। हमने सारे सामान गीले कपड़े आदि फैला दिये और निश्चिंत हो पूरे कैम्प परिसर में घूमते रहे।

चोरी–चकारी का कोई भय नहीं था। थोड़ी सी परेशानी हमारे बगल के तंबू में ठहरे साधुओं के कारण हुई। वे ढोल मंजीरे बजाकर भजन गा रहे थे। थोड़ी देर बाद वे फिल्मी गीत गाने लगे और अंत में अश्लीलता पर उतर आये। धूनी एवं चिलमों का धुंआ भी आ रहा था। मैने हमारे तंबू का उनकी तरफवाला पर्दा पूरा खोल दिया। साधुओं को दिखाई दे गया कि उनके पास के तंबू में कोई भद्रजन व महिलायें हैं जो उनके सब क्रिया कलाप देख–सुन रहे हैं। उनकी हरकतें अपने आप बंद हो गयी और बाद में उन्होंने देर रात तक सिर्फ भजन ही गाये।

पहलगांव में हमें लगातार हल्की बरसात मिली ऐसे में हमारे रैनकोट बहुत काम आये। रात में हमारे तंबू में जीरो पावर का बल्ब जलाया गया फिर भी हम टार्च सिरहाने रखकर सोये पता नहीं कब काम आ जावे। पीने के पानी की तीन बोतलें हमारे पास थी जो हमने रात के लिये भरकर सिरहाने रख ली। सुबह शायद जल्दी उठना पड़े। रात में कोई काम भी नहीं था हम जल्दी ही सो गये।

तारीख 14 अगस्त 2007 मंगलवार प्रातः उठे तो तेज बरसात हो रही थी। रैनकोट पहन कर शौचालय जाना बहुत तकलीफदेह रहा। सारे रास्ते में कीचड़ से फिसलन हो गयी थी। लगातार ऐलान सुनाया जा रहा था, 'तेज बरसात के कारण अमरनाथ यात्रा रोक दी गई है कोई भी यात्री आगे जाने का प्रयास न करे।' सुबह यहां सर्दी भी महसूस हुई। साढ़े सात बजे तक बारिश कम हुई और मौसम खुलने लगा। यहां नुनवान कैम्प से सामने के पहाड़ का सुहाना दृश्य दिखाई देता रहा। पहाड़ों पर चहल–कदमी करते बादल, उनके बीच डूबता–उतरता सूरज, जिससे बिखरती रंगीन छटा। हर पल अलग नजारा, हम बहुत देर तक निहारते रहे। यात्रा स्थगित हो ही गई है तो यहां का पूरा आनंद लिया जाये। मैं लंगर की तरफ निकल गया। चाय वितरित हो रही थी, नाश्ता अभी देर से बनेगा। वापसी में नाई के यहां नम्बर लगाया व दाढ़ी बनवाई। एक मेज व एक कुर्सी लगा कर एक नाई उस्तरा चला रहा था। पूरा कैम्प व एक दुकान, भारी भीड़ थी। मिलेट्री, पुलिस, प्रशासन, साधु, यात्री सब एक ही लाइन में लगे थे। अलबत्ता मिलेट्री वाले पांच रु. व यात्रीगण दस रु. चार्ज दे रहे थे। आम हिन्दुस्तान की नाइयों की दुकानों की तरह यहां भी बहुत सारी चर्चायें व अफवाहें सुनाई दे रही थी।

मेरे आने तक मेरे परिवार वाले सब नहा धो कर निबट चुके थे। मैं लोटा साबुन व कपड़े ले स्नानघरों की ओर गया। कोई पचासों स्नानघर देखने के बाद एक महिला स्नानघर नहाने लायक मिला। गंदे भी हम यात्रियों में से किसी ने ही किये हैं पर प्रशासन को सफाई की व्यवस्था तो करवानी ही चाहिये। स्नानघर में बाल्टी भी थी। साबुन का प्रयोग कर सारे कपड़े धोये तथा एकदम ठंडे पानी से नहाया। यहां गैस के गीजर से पानी गर्म करके देने की भी व्यवस्था है जिसका चार्ज दस रु. प्रति बाल्टी है। यहां गीजरों में प्रशासन द्वारा रसोई गैस का व्यवसायिक उपयोग करवाया जा रहा है।

प्रशासन द्वारा आज भी किसी यात्री को कैम्प के बाहर नहीं जाने दिया गया। कई व्यक्ति लिद्दर नदी में नहाने जाने की जिद कर रहे थे। समय गुजारने के लिये हमने कुछ फोटोग्राफी की फिर लंगर पर आ गये। लंगर वालों ने आपस में समझौता कर लिया और आज एक ही लंगर पर नाश्ता बनाया गया। यात्री बहुत कम हैं तथा ज्यादा लंगर चलने पर बहुत सारा खाना फेंकना पड़ जाता है। लंगर पर छोले भटूरे तथा पूरी आलू की सब्जी नाश्ते में दी जा रही थी जिसे लेने के लिये यात्रियों की लंबी कतार लगी थी। कतार देख कुंवर सा. व मैं दोनों लंगर के अंदर जा घुसे और तुरंत ही मैदा व आटे के लोये बनाने के काम में लग गये। पहले लंगर में एक ही कड़ाही चल रही थी। भीड़ देख व्यवस्थापकों ने दूसरी कढ़ाही चालू कर दी और हमारे को पूरा काम मिल गया। हम दो घंटे तक लंगर में लोये बनाते रहे पर न कतार खत्म हुई और न हमने नाश्ता किया। तभी खबर उड़ी कि यात्रा खुल गई है। खबर को अफवाह मान हम काम में जुटे रहे। बाद में मैं गेट देखने आया जहां एक लंबी लाइन लग चुकी थी। मैंने वापस लंगर में आकर कुंवर सा. के कान में कहा, 'आओ अब चलें, यात्रा खुल गई है। हम नाश्ते का अरमान लिये भूखे ही तंबू में आ गये जहां मां व बहिन सारा सामान समेट कर यात्रा पर आगे चलने के लिये हमारा इंतजार कर रही थी। भारी कीचड़ वाले मार्ग में सामान उठाये संभल–संभल कर चल हम लंगर के सामने से गुजरे। गर्म नाश्ता करने को मेरी जीभ लपलपा रही थी पर अभी भी वहां भारी भीड़ थी। निराश हम निकास द्वार पर पहुंच कैम्प के बाहर सड़क पर आ गये। यहां से मिनी बस 35 रु. तथा टैक्सी 80 रु.

प्रति सवारी में चंदनबाड़ी जा रही है। एक बैलोरो टैक्सी जीप वाला तुरंत ही आ गया। उसकी गाड़ी में 6 सवारी पहले से बैठी थी। हमारा सामान जीप के कैरियर पर बांध हमें बिठा तुरंत ही गाड़ी रवाना हो गई। जीप में ही हमने हमारे बैग में से निकाल थोड़ा–थोड़ा नाश्ता कर लिया।

घुड़सवारी

पहलगांव के बाहर तथा चंदनबाड़ी में घुसने से पूर्व वही गहन जांच हुई । खोलने लगाने के चक्कर में हमारे एक बैग की तो चैन खराब भी हो गई। खूबसूरत घाटी में लगे चिनार के पेड़ और ढलानों पर जमें बर्फ के ग्लेशियरों को देखते हुये हम चंदनबाड़ी पहुंचे। टैक्सी स्टैण्ड से कैम्प कोई चौथाई किमी सामान लेकर चलने में हमारी सांसे ऊपर–नीचे होने लगी। यहां भी तंबू नगरी कांटेदार तारों के बीच चाक चौबंद सुरक्षा में बसाई गई है। यहां पुनः सारे सामानों की गहन जांच हुई। हमें खीज सी होने लगी। चंदनबाड़ी पहुंचने तक मौसम एकदम खुल गया। सामान उठाकर चलने में इतने ठंडे इलाके में भी पसीना आ गया। कैम्प में प्रवेश के बाद पहले लंगर में रुक भरपेट दालरोटी खाई। गतवर्ष भी शायद मैं इसी लंगर में रुका था पर अब नक्शा बहुत बदल गया है। कोई पहचान का आदमी भी नजर नहीं आ रहा। खाने के तुरंत बाद हम यात्रा पर आगे बढ़े और चंदनबाड़ी की पक्की सड़क पर आ गये। हमें एक–एक कदम चलना भी बहुत भारी लग रहा है। पिठ्टू और घोड़े तो करने ही है। घोड़े वाले हमारी मजबूरी देख मुंह फाड़ रहे हैं। मैं योजनानुसार धीरे–धीरे आगे बढ़ता रहा। आगे एक ओर लंगर पर हमें आग्रहपूर्वक रोका गया। हम हाड़ौती भाषा में बातें कर रहे थे। लंगर पर बैठे एक सेवादार तलवंडी कोटा के तथा दूसरे जयपुर के थे। हमने आपस में एक दूसरे के नाम पते लिखे। यहां लंगर के सेवफल तथा मोतीचूर के लड्डू ग्रहण किये। मैने घोड़े और पिठ्ठू वालों के बारे में भी यहां जानकारी प्राप्त की।

कुछ और आगे बढ़ने पर बहुत सारे घोड़ेवाले मिले। आज यहीं सोने की धमकी देने पर बड़ी मुश्किल से दो–दो सौ रु. में घोड़े हुये। पांच बैग सामानों के ढाई सौ रु. और देने पड़े। हमें डेढ़ बज गये हैं। प्रशासन द्वारा दो बजे बाद यात्रियों को आगे की यात्रा पर नहीं जाने दिया जाता है। मेरा स्वयं का अनुभव यह कहता है कि पैदल यात्री को तो 11 बजे से पूर्व ही चंदनबाडी छोड़ देना चाहिये। अब हमारे पास घोड़े हैं तो समय की क्या चिंता? घोड़े आगे पीछे हो गये। हम एक घंटे में पिस्सू टॉप पर पहुंच गये। मां को लेकर घोड़ेवाला हमारे आने से पूर्व ही आगे निकल गया। इससे हमें थोड़ी चिंता हुई। हम तीनों ने आध घंटा पिस्सू टॉप पर रुक वहां लग रहे लंगर के शानदार खाने का आनंद लिया। यहां से चल हम जॉजबल रुके। मां एक लंगर में बैठी सेवादारों से आदर ग्रहण कर रही थी। गतवर्ष मां इसी लंगर में तीन दिन रुकी थी। मां ने व सेवादारों ने आपस में एक दूसरे को झट पहचान लिया। बादल छाने लगे थे मौसम बिगड़ने की आशंका में हम जॉजबल में ज्यादा नहीं रुके। कुछ देर और घोड़े पर बैठे फिर डेढ़ किमी की पैदल यात्रा शुरु हुई। यहां से नागाकोठी तक संकरा रास्ता है। इस रास्ते पर घोड़ों को जाने की अनुमति नहीं है। ऊपर के रास्ते से घोड़े गुजरते है, सामान ले जाते है पर वहां से यात्रियों को क्यों नहीं ले जाते यह मेरे लिये एक पहेली है।

पैदल यात्रा में ही हमारी शारीरिक क्षमता की परीक्षा हुई। मां को जिसे हम कमजोर मान रहे थे सबसे तेज चली। कुंवर सा. को सबसे ज्यादा थकान रही। नागाकोठी नामक स्थान पर पहुंच हमने थोड़ा विश्राम किया एवं खरीद कर शीतल पेय पीया। हमारे चारों घोड़ेवाले यहां हमारे से पूर्व पहुंच गये थे। उन्होंने हमारे से चाय पी। फिर चलने की जल्दी मचाने लगे। हम घोड़ों पर बैठ कोई आध किमी आगे चल गये तब पता लगा कि हमारा एक बैग नागाकोठी में ही रह गया है। गलती करने वाला घोड़ा चालक अपना घोड़ा दूसरे को संभलाकर तुरंत ही बैग वापस लेने दौड़ा। वह हमें दो किमी बाद वापस पकड़ सका। शेषनाग झील में गत वर्षों की अपेक्षा पानी बहुत कम है। नीले पानी से भरी झील अत्यन्त मनोरम लगती है।

शेषनाग

उजाले में ही हम शेषनाग पहुंच गये। शेषनाग की पहली पहाड़ी पर उजड़े हुये मेले के निशान हैं। अभी भी कई दुकानदार अपनी दुकानें समेटने तथा उन्हें घोड़े पिठ्ठुओं पर लदवाने में लगे हुये है। पूर्व में मुझे इस रास्ते में ग्लेशियर मिलता था इस बार वह ग्लेशियर भी पिघल चुका है। घोड़े वालों ने हमें बेस कैम्प के सामने उतारा। आध घंटा कतार एवं जांच पड़ताल में पूरा हो गया। यहां तंबूवाले व्यापारियों की यूनियन बनी हुई है। हमने सवा सौ रु. प्रति यात्री में आठ पलंगवाले तंबू में सामान डाले। हमारे तंबू से सुविधायें, पीने का पानी, अस्पताल पास ही है तथा यहां से सामने की पर्वतमालाओं का सुहाना दृष्य सदैव दिखाई देता रहेगा। हां, बाहर आने जाने का गेट तथा लंगर यहां से दूर है। यहां भारी सर्दी है, हमने हमारे पास के सारे गर्म कपड़े निकाल कर पहन–ओढ़ लिये। पहला काम लंगर पर जाकर ब्यालू करना था। लंगर तक जाना दुरुह कार्य है, शायद दूरी देख कर ही मां व बहिन दोनों ने खाना खाने के लिये मना कर दिया। यहां शेषनाग में सदैव यह समस्या रही है। बेस कैम्प से लंगर बहुत दूरी पर लगते हैं। मां व बहिन दोनों रजाइयों में दुबक कर सो गये और हम दोनों लंगर की ओर अग्रसर हुये। एकमात्र गेट से सुरक्षाकर्मियों द्वारा बताये रास्ते से बढ़े। रास्ता उबड़–खाबड़ तथा चढ़ाई वाला है। दो बार रास्ते में सांस लेने के बाद भी वहां पहुंचने तक सांसे चलने लगी। हमारी खराब हालत देख अब कुंवर सा. ने भी हथियार डाल दिये, 'पैदल यात्रा असंभव।' यात्रा के प्रारम्भ में सब पैदल यात्रा करने के प्रति अति उत्साही थे।

आज यहां मात्र दो लंगर कार्यरत हैं। बहुत से लंगर उठ चुके हैं या उनके तामझाम खोले जा रहे हैं। हमने एक लंगर पर खिचड़ी खाई और दूसरे पर रोटियां। यहां लंगर पर पीने के लिये गरम पानी केटली में भरकर रखा गया है। गरम पानी पीने से बड़ी राहत मिली। चार रोटियां और एक दोना दाल हम हमारे तंबू में ले आये जो दोनों मां बेटी ने खाई। हमने बोतलें पानी से भरी तथा टॉर्च सिरहाने रखकर पूर्ण अंधेरा होने से पहले ही सो गये।

14–15 अगस्त की रात शेषनाग में भारी सर्दी रही और पूरी रात ही मध्यम स्तर का पानी बरसता रहा। हमारे तंबू में कई जगह छेद थे इसलिये दो दो रजाइयां ओढ़ने के बाद भी सर्दी लगी। यहां भी हमारे तंबू में अन्य यात्री नहीं आये और आठों बिस्तरों का हमने उपयोग किया। रात को बिजली पूर्णतः बंद कर दी गई। पूरा शेषनाग अंधेरे में डूबा रहा। एक पहरे की सर्चलाइट पहाड़ों व कैम्प पर घूमती रही। ऐसे में रात में पेशाब करने के लिये तंबू के सामने की भूमि का ही प्रयोग किया। यहां सर्दी के मारे हमारे मुंह कड़ुये हो गये हैं। ठंडा पानी पीने में नहीं आता और खाना स्वाद नहीं लगता।

अनहोनी

15–अगस्त–2007 बुधवार प्रातः सबकी जल्दी नींद खुल गई थी पर सब रजाइयों में दुबके रहे। सबसे पहले मां तंबू के बाहर निकली। मैंने पूछा,

''मैं चलूं क्या?''

मां ने कहा, ''क्या जरुरत है?''

मां बरसती फुहारों में शौचालय की ओर चली गई, आलस्यवश मैं नहीं उठा और अनहोनी हो गई। पांच मिनट बाद ही मां रोती–चीखती वापस लौटी। उसके सारे कपड़े मिट्टी में लथपथ हो रहे थे।

''अरे बेटा! मेरे तो हाथ पैर तोड़ दिये रे भगवान ने। मेरे सारे कपड़े भी गंदे हो गये हैं रे। मैं रिपट कर कर गिर गई।''

हम तीनों चौंक कर तंबू के बाहर आये और मां को हाथ पकड़ कर ले जाकर पलंग पर लिटाया। उसके हाथ पैरों में बहुत दर्द था तथा वह बहुत घबराई हुई थी। मां को रजाई उढ़ाकर सुलाया और बहिन ने भीगे कपड़े बदलवाये। मां के हाथ व कमर में भारी चोटें आई है। हम कपड़े बदलवा रहे थे इस समय

में ही कुंवर सा. तंबू के बाहर जाकर यहां की चिकित्सा व्यवस्था के बारे में पूछताछ कर आये। कुंवर सा. ने अपनी मिलनसारिता से यहां कई लोगों से रात में ही दोस्ती कर ली थी। इस प्रक्रिया में कोई घंटाभर बीत गया। कपड़े बदलने तथा दो रजाइयों में सुलाने से मां को कुछ तसल्ली मिली। हम बांहों से पकड़ कर मां को यहां के चिकित्सालय में ले गये। वहां मिले डाक्टर ने मां के हाथ में अच्छी तरह पट्टी बांध दी तथा बुखार रोधी पैरासिटामोल तथा दर्दनाशक ब्रूफेन गोली खाने के लिये दे दी।

हमने मां को वापस तंबू में लाकर लेटा दिया। अब समस्या थी मां को कुछ खिलाकर गोली देने की। मां ने मंजन नहीं किया था और न ही शौच गई थी। उसके नियम के अनुसार वह बिना नहाये धोये कुछ खाती नहीं है। आज इन नियमों को तोड़ना ही पड़ेगा। मां ने ब्रश किया और उसके बाद वह कुछ खाने को तैयार हो गई। हमने तंबूवाले व्यापारी से एक बोतल गर्म पानी दस रु. में खरीदा। पानी में इलेक्ट्राल पावडर जो हमारे साथ था, घोलकर उससे मां को दोनों गोलियां खिला दी। उसके हाथ पैरों एवं कमर की सरसों के तेल से मालिश की तथा दो रजाई उढ़ा कर सुला दिया। हमने अपने थैले में से नाश्ता निकाला और मां को धीरे–धीरे कुछ न कुछ खिलाते रहे। गोलियों व नाश्ते के प्रभाव से मां को नींद आ गई।

जश्न–ए–आजादी

आज हमारा स्वतंत्रता दिवस है और हम शेषनाग में मौजूद हैं। बारिश के कारण यात्रा स्थगित कर दी गई है। हमारे चेहरों पर चिंता की रेखायें खिंची हुई हैं। क्या अब यात्रा पर जाना संभव हो पायेगा? भोलेनाथ क्या मां को दर्शन नहीं देना चाहते? मां को शेषनाग में छोड़ना मुमकिन नहीं हैं। बारिश नहीं थमी तो मां टॉयलेट कैसे जा पायेगी? चलो अब जैसा भी होगा भोले की मर्जी। सामने की पहाड़ी पर कुछ पक्के आवास बने हैं। उसके पास के छोटे से मैदान में तिरंगा बंधा हुआ है। पता लगाया आज यहां मिलेट्री द्वारा ध्वजारोहण कर जश्न–ए–आजादी मनाया जायेगा। कुंवर सा. के मन में सैनिकों के साथ जश्न मनाने की इच्छा है। वे यहां के पहरेदार से बात भी कर आये हैं।

मां कीचड़ पर रिपट कर गिरी यह चप्पल पहनने में हुई गलती का नतीजा है। हम अमरनाथ यात्रा में न रिपटने वाले जूते लाने पर विशेष ध्यान देते हैं। मां ने जूतियां पहनने से मना कर दिया तो मैं उसके लिये प्लास्टिक के चप्पल खरीद कर लाया। हमारे मित्र महेन्द्र अदलक्खा ने सख्त ताकीद की थी कि यह चप्पल आज से पहनना शुरु करवा देना ताकि छाले पड़ें तो हम दूसरी चप्पल ले लें। मेरे कई बार कहने के बावजूद मां ने मंदिर से चोरी होने के डर से यात्रा से पहले नई चप्पल नहीं पहनी। घर से रवाना होते समय मां नई चप्पल पहन तक कार तक आई और मेरे से कहने लगी कि इस चप्पल से तो छाले होंगें। मैं भागकर घर आया और मां की पुरानी चप्पल उठाकर रख लाया। मां को पहलगांव की रपटीली पगडंडी पर नई चप्पल पहनाई तो उसके पैर में छाले हो गये। आज सुबह मां वही पुरानी रिपटनेवाली चप्पल पहन कर चली गई। बरसात के कारण गीली चिकनी मिट्टी खतरनाक हो ही गई थी। ऐसे में मां साफ शौचालय ढूंढने के लिये भटकती रही। उसके दायें हाथ में साबुनदानी थी। मां ने वहां पड़े प्लास्टिक के किवाड़ पर पैर रख दिया। पैर रिपट गया और मां उसी किवाड़ पर गिर गई। उसका बायां हाथ जमीन पर टिका और चोटग्रस्त हो गया। गिरने के बाद मां ने मदद के लिये बहुत आवाजें लगाई। दस कदम दूर ही मिलेट्री जवान बंदूक लिये पहरा दे रहा था। उसने बहुत देर बाद मां को उठाया और दस–पांच कदम चला कर छोड़ गया। मां ने उससे तंबू तक छोड़ने के लिये निवेदन भी किया पर उसके लिये शायद पहरे पर खड़ा होना ज्यादा जरूरी था। मां के मन में जवान प्रति धन्यवाद कम, आक्रोश ज्यादा रहा।

मैं इस यात्रा में मेरे द्वारा लिखी पुस्तकें साथ लाया था। कुंवर सा. वाकपटु हैं। उन्होंने हर जगह अफसरों से दोस्ती की ऐसे में मेरी पुस्तकें भेंट देने के काम आई। शेषनाग में उन्होंने मिलेट्री के सबसे बड़े अधिकारी को दोस्त बनाकर मेरी पुस्तक भेंट की तथा तंबू व्यापारी पर दबाव डलवाकर सौ रु. कम करवा लिये। यहां मुसीबत में भी उनकी वार्ता शैली से हमें बहुत मदद मिली। हमारा डॉक्टर मेरी पुस्तक दिन भर पढ़ता रहा और कई लोग पुस्तकें मांगते ही रह गये क्योंकि किताबें खत्म हो गई।

पिस्सू टॉप के बाद मोबाइल ने काम करना बंद कर दिया। टावर नहीं है। शेषनाग में एक सफेद गोल तंबू में एस.टी.डी. सुविधा विशेष फोन से उपलब्ध करवाई गई है। मैंने पहलगांव से हमारे आगे बढ़ने की सूचना घर दे दी थी। आज पुनः घर बात कर बताया कि हम यहां अटक गये हैं। मां की दुर्घटना की खबर मैंने घर नहीं दी।

कुंवर सा. नौ बजे ध्वजारोहण स्थल पहुंच गये। यहां चैकिंग जामा तलाशी के बाद सभी को जाने दिया जा रहा है। मजदूर, घोड़ेवाले, टेन्ट व्यापारी आदि सभी टोपी लगाये तथा मोटा ऊनी लबादा पहने बरसते पानी में 15 अगस्त मनाने जा रहे हैं। कोई आध घंटे बाद जब मां को नींद आ गई तो मैं बहिन से अनुमति ले ऊपर पहुंच गया। बहिन स्वयं तंबू का पर्दा खोल ध्वजारोहण देखने लगी। कुंवर सा. में यहां गजब का उत्साह था। वे बरसते पानी में भीगने की परवाह न करते हुये लगातार जवानों से हाथ मिला रहे थे। मैं अपने आपको भीगने से बचाने के प्रयास में ही लगा रहा। समय पर ध्वजारोहण एवं राष्ट्रगान हुआ। बाद में सभी ने टेबल पर सजाकर रखा नाश्ता लिया। सभी को साग्रह नाश्ता करवाया गया। चार तरह की मिठाई, तीन तरह के नमकीन, पकौड़ी, चाय तथा पीने का गर्म पानी और डिस्पोजल बर्तन। कुंवर सा. ने यहां अपने कैमरे से खूब फोटो भी खिंचवाये।

'ऐसा अवसर जिंदगी में दुबारा नहीं आयेगा इसे यादगार बना लो।'

यहां सामने तीन बर्फीली चोटियां सिर उठाये खड़ी है। एक सैनिक से पता लगा कि इनका नाम ब्रह्मा, विष्णु और महेश है।

डेढ़ घंटे के उत्सव के बाद हम लौटै तो हमारे साथ एक दोने में स्वतंत्रता दिवस की मिठाई भी थी जिसे हमने मां व बहिन को खिलाया। हमारे जाते ही मां उठ बैठी। अब केवल बायें हाथ की कलाई में दर्द था। पूरे हाथ में ही सूजन आ गई थी। महेन्द्रजी व बहिन मां से बतियाने लगे और मैं कुछ दूसरी उधेड़बुन में टेन्ट से बाहर चला गया। यहां पेशाब व शौच जाने की सुविधा बारिश के कारण नहीं है। मां इस डर से पर्याप्त खा–पी नहीं रही है। यहां कुछ पक्के हट्स बने हुये हैं जिनमें अटैच लेटबाथ हैं। यदि किसी तरह उनमें जगह मिल जावे तो सारी समस्या दूर हो जाये। मैं पास ही बनी जे.के. सरकार की डिस्पेंशरी में घुस गया। यदि मां को अस्पताल में भर्ती करवा दें तो भी समस्या का समाधान होता है। यह सुविधा मिल जाये तो हम मां को खिला–पिला कर जल्द स्वस्थ कर देंगे। यही विचार बना मैं डिस्पेंसरी से होता हुआ डॉक्टर आवास पर पहुंच गया। वहीं हमारे तंबू का स्वामी भी बैठा था। मैंने विस्तृत रूप से हमारी साथ घटित दुर्घटना व अब हमारी आवश्यकता की जानकारी दी। यहां अस्पताल में मरीज भर्ती की कोई सुविधा नहीं है। हट्स अभी चालू नहीं हैं। वे मेरी कोई मदद नहीं कर सकते। इसके बाद मैंने तंबू व्यापारी को मोटे किराये का लालच देकर सुविधा मांगी। उनकी आंखों में चमक आई और वे बहुत देर तक हट खोलने के तरीकों पर उनकी कश्मीरी भाषा में विचार करते रहे। अंत में उन्होंने जे. एंड के. शेरीन बोर्ड पर मामला ढोल दिया। मैंने उन्हें इंसानियत का हवाला दे भावनात्मक रूप से पटाने की भी कोशिश की पर वे नहीं पसीजे।

यह पूरी यात्रा जम्मू काश्मीर शैरीन बोर्ड (तीर्थयात्रा मंडल) द्वारा संचालित है। बोर्ड यहां के व्यापारियों से मोटा किराया लेकर उन्हें तंबू आदि लगाकर कमाने की इजाजत देता है। बोर्ड का काम मार्ग बनवाना, पेयजल, सफाई, शौचालय आदि की व्यवस्था करना है। बोर्ड के भी यहां यात्री आवास तंबू हैं जिनमें वाजिब किराया लिया जाता है। घोड़े पिठ्ठू के लाइसेंस व परिचय पत्र बनाने का काम सुरक्षा बलों का है जबकि उनकी मजदूरी का निर्धारण बोर्ड करता है। यहां बोर्ड का एक मुस्लिम कर्मचारी तैनात है। हम रात में ही उससे टायलेट्स की सफाई के बारे में मिल चुके है। पर उसका रवैया गैर जिम्मेदारना है। यात्री जायें भाड़ में उसे तो उसका वेतन मिलना चाहिये। उसने रात ही हमारे लिये कुछ नहीं किया अब क्या उम्मीद करें?

अंधकार से प्रकाश की ओर

मैं तंबू में लौटा तो सब बातें कर रहे थे। मैने अपने प्रयासों की असफलता की जानकारी दी। मां ने भी मेरी बात सुनी। मेरे चेहरे पर छाई निराशा व परेशानी देख वह उत्साह से बोली, 'तू क्यों परेशान हो

रहा है। मैं पैदल यात्रा पर चलूंगी। भगवान ने मेरा हाथ ही तोड़ा है, पैर तो सलामत हैं।' मां के इस अति उत्साह को देख मेरी चिंता काफी हद तक दूर हो गई। मेरे जाने के बाद निश्चय ही बहिन व कुंवर सा. ने मां को हिम्मत बंधाई थी। ईश्वर की अनुकंपा से साढ़े बारह बजे बूंदाबांदी थम गई। मां दैनिक कार्यों से निबट आई और उसको भूख भी लगी। हमारे पास बंधा नाश्ता हम कर ही रहे थे। कुंवर सा. व मैं लंगर पर खाना खाने गये तो दो गिलास साथ ले गये। मां व बहिन के लिये खाना लाना था। दोनों लंगर पर घ ूम हमने भरपेट खिचड़ी, दाल, रोटी आदि ग्रहण की। तंबू के लिये हमने गिलास में दाल ली। लंगर वालों ने दोने भी दिये। हम बोतल लाना भूल गये थे इसलिये गरम पानी नहीं ले जा सके। मौसम खुलने के बाद ठंडी हवायें चलने लगी थी। कभी धूप भी निकल आती थी।

तंबू में कुछ देर आराम करने के बाद मैं दो बोतलें ले लंगर की ओर पानी लेने गया। वहां पता लगा कि अभी यात्रा खुल सकती है। मैने वहां मां के लिये पालकी तथा हमारे लिये घोड़े ढूंढने का प्रयास किया। चूंकि आज सुबह यात्रा बंद थी अतः यहां कोई पालकी वाला नहीं आया था। घोड़े भी बहुत कम आये हैं जो बहुत ज्यादा पैसे मांग रहे हैं। मेरे देखते ही देखते गेट पर यात्रियों की लंबी कतार लग गई। मौसम तो खुला था पर बादल बहुत घुमड़ रहे थे। रास्ते में कभी भी और कहीं भी पानी आ सकता है। आगे विकट चढ़ाई और संकरा रास्ता। अभी जाना बहुत जोखिमभरा काम है। घोड़े से पहुंचने में भी रात हो जायेगी। पैदल तो शायद ही कोई यात्री पंचतरणी पहुंच पाये। मेरा मन तो आज यात्रा पर निकलने का नहीं हो रहा था। फिर भी मैने गेट पर खड़े अधिकारी से पूछ ही लिया,

'कितने बजे तक जाने दोगे।'

'ढाई बजे तक।'

दो तो बज ही गये हैं। इतनी देर में तो मैं तंबू में जाकर वापस भी नहीं आ सकता। दो बजे गेट खोल कर यात्रियों को आगे जाने दिया गया। यहां कई यात्री घोड़ेवालों की चिरौरी करते नजर आये। मैं पानी लेकर तंबू में लौटा तो हमारे सारे सामान पैक तैयार थे। खबर यहां भी मिल ही गई थी और कुंवर सा. को तो जल्दी थी ही। मैंने न जाने के सारे प्वाइंट बताये। फिर मां का क्या होगा? कुंवर सा. एक दिन खराब नहीं करना चाहते थे। वे मुझे फिर गेट के पास ले आये। शायद कुछ व्यवस्था हो ही जाये।

हमें बाजार व गेट के पास कई घोड़े मिल गये। मां के लिये पालकी तो नहीं मिल पायेगी पर हेल्पर की व्यवस्था हो जायेगी जो घोड़े पर बैठी सवारी को पकड़ कर चलते हैं। घोड़े वाले बहुत भाव खा रहे थे। सवारियां बहुत ज्यादा थी और घोड़े बहुत कम। ढाई बजे गेट बंद कर दिया गया। थोड़ी देर में ही वहां बीसेक यात्रियों की कतार लग गई। पहले अनुरोध और फिर नारेबाजी, सैनिक अधिकारियों को साढ़े तीन बजे पुनः गेट खोल उन्हें निकालना ही पड़ा। हमारे साथ घोड़े तलाशने वालों में ग्यारह सदस्यीय महाराष्ट्रियन यात्रियों का दल भी था। वे संभ्रान्त, शिक्षित और सम्पन्न परिवारों के थे। घोड़े न मिलने पर उन्होंने अमरनाथ जाने के बजाय वापस चंदनबाड़ी लौटने का निर्णय ले लिया। मुझे उनके निर्णय पर दुःख हुआ। मैने उन्हें प्रातः साथ यात्रा पर चलने के लिये कहा पर उनके साथ बहुत सी मजबूरियां है। उनकी तीन साथी महिलायें बीमार होने के कारण अभी चंदनबाड़ी में ही रुकी हुई है। एक बच्चा और दो महिलायें यहां बीमार हो गई है। उन्हें आगे ऊपर जाने के लिये साधन नहीं मिल रहा और वापस नीचे जाने के लिये कई घोड़े तैयार खड़े हैं। कल भी क्या पता मौसम खुले या नहीं।

''अब भोलेनाथ बुलाना ही नहीं चाहता क्या करें?''

इतने ज्यादा नाजुक लोगों को अमरनाथ यात्रा जाना भी नहीं चाहिये। वे भोलेनाथ पर अविश्वास कर वापस चले गये और मैं भोलेनाथ पर विश्वास कर रुक गया।

साढ़े तीन बजे बाद गेट पुनः बंद हो गया और अब यात्रा पर जाने का कोई अवसर नहीं रहा तो हम वापस तंबू में लौटे। अब तो तंबू वाले को आज का किराया और दे दें। बहुत भाव–ताव के बाद कल से सौ रु. कम अर्थात् तीन सौ रु. दे कर हिसाब किया। बार–बार तेज धूप निकल रही थी। महिलाओं ने तंबुओं की रस्सीयों पर कपड़े सुखा दिये। मैंने जाते ही रस्सी बांध दी और अब कपड़े व्यवस्थित तरीके से सूखने लगे। मां को बताने पुनः मिलेट्री अस्पताल ले गये। पता लगा सुबह जिन्होंने पट्टी बांधी थी वे कम्पाउंडर सा. थे। डॉक्टर सा. मेरी लिखी अमरनाथ यात्रा 1994 पुस्तक पढ़ने में व्यस्त थे। स्वाभाविक रुप

से हमें उचित आदर मिला। मां के हाथ का दुबारा निरीक्षण हुआ एवं दवाइयां बदल दी गई। मैंने भी मेरे लिये भोजन पचाने की गोलियां ली। थोड़ी ही देर बाद बहिन शकुंतला के लिये भी डाक्टर सा. से दवाईयां ली। उसे दो दिन से दस्त नहीं आ रहे हैं। मैं बहिन को डलकोलेक्स गोली पूर्व में ही दे चुका था। डा. सा. ने ईसबगोल की भूसी गर्म पानी में लेने के लिये दी।

स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष में पास के ही मैदान में क्रिकेट का मैच सुरक्षाबल बनाम जनता के बीच खेला जा रहा है। हमने तंबू के बाहर दो पलंग निकालकर धूप में बिछा लिये थे। धूप खाना, कपड़े सुखाना और मैच देखना तीनों काम एक साथ हो रहे थे। कुंवर सा. कुछ आगे बढ़कर मैच में शामिल से हो गये। मैदान पर पहुंचने के लिये कांटेदार तार के नीचे से गुजरना पड़ता है। उनके न जाने कब सिर में तार से लंबी खरोंच आ गई जिससे सिर में खून की गहरी रेखा बन गई। शाम को मेरी निगाह उनकी चोट पर पड़ी तो मैं प्रबल आग्रह कर उन्हें जे.के.सरकार की डिस्पेंसरी में ले गया। जहां खरोंच पर टिंचर लगा दी गई।

हमारे सामने बने पक्के मकान पर तिरंगा लहरा रहा है। वहां से अमरनाथ यात्री आते–जाते दिख रहे हैं। फिर तो हम भी वहां रुक सकते हैं। पहले मेरा ख्याल था कि यह भवन सिर्फ सुरक्षाबलों के लिये हैं। हमने गेट पर सैनिक से पूछ ही लिया।

'यहां सिर्फ सैनिक अधिकारियों के मेहमान रुक सकते हैं।'

वे मेहमान भी अभी गेट पर जाकर वापस लौटे हैं। सेना के समर्थन के बावजूद वे आज यात्रा पर आगे नहीं बढ़ सके।

आज दोपहर में मैंने एक उठते हुये लंगर के संचालकों से हमारे साथ घटी दुर्घटना बताते हुये लंगर में जगह देने का आग्रह किया था। थोड़ी मनुहार के बाद वे मान गये थे।

'ज्यादा परेशानी हो तो आ जाना।'

दुबारा पुनः उन सेवादार जी से मुलाकात हुई तो उन्होंने मेरे से आगे चलकर लंगर में आने के लिये कहा। पर अब तो मौसम और मां की तबियत दोनों ठीक हो गये हैं।

सायं चार से छः बजे तक तेज ठंडी हवा के बावजूद धूप सुहाती रही। हम बतियाते रहे। मां लगातार कहती रही, 'घोड़े पालकी की क्या जरूरत है, मैं तो पैदल चल चलूंगी। वाह रे मेरी मां का साहस! हमारी लंगर तक जाने में ही जान सूख रही है। कुंवर सा. को यहां शेषनाग में चलने में बहुत थकान हो रही है। वे ऊंचाई को इसका कारण बता रहे हैं तथा बार–बार कपूर सूंघ रहे हैं। मुझे और कोई गड़बड़ लगती है। बी.पी. चैक करवाया था पर वह तो सही निकला। मेरा शक शुगर पर भी है पर यहां उसकी जांच की कोई व्यवस्था नहीं हैं। यहां सर्दी के मारे हमारा मुंह कडुवा रहता है जैसे बुखार आ रहा हो। भूख क्रमशः कम होती जा रही है। हमारी सबकी नाक के ऊपर की चमड़ी उधड़ सी गई है तथा होंठ फट गये हैं। वेसलीन का लगातार प्रयोग भी बेअसर साबित हो रहा है।

शाम होते–होते हम चारों ब्यालु करने लंगर की ओर गये। हमारा सारा सामान तंबू में खुला पड़ा है पर हमें यहां कोई चोरी–चकारी का डर नहीं है। मां के हाथ में बंधा पट्टा देख कई लोगों ने हाल चाल पूछे तथा सहानूभूति प्रकट की। पीछेवाले लंगर में रोटी बनना चालू हुई है। मैने वहां के सेवादार से रोटियां बनाने का काम कुछ समय हमें देने का आग्रह किया पर उसने यह कह कर मना कर दिया कि यात्री ही कितने हैं वे लोग ही फालतू बैठे हैं। भोजन करके लौटते समय हम दो बोतल गर्म पानी भर लाये। दूसरा दिन होने के कारण यहां गेट पर तैनात सैनिक हमें पहचानने लगे हैं। वापसी में हमारी चैकिंग नहीं की गई। मैंने गर्म पानी की बोतलें रजाई के अंदर दबा कर रख दी ताकि वे ज्यादा देर तक गर्म बनी रहे। बाहर हाड़कंपा देने वाली ठंडी हवायें चल रही है। हम सामने के पर्वत का सायंकालीन नजारा देख रहे थे तभी हमारे तंबू का स्वामी हमें टोक गया,

'बाबूजी ठंड बहुत है, अंदर जाकर रजाई में बैठो वरना बीमार हो जाओगे।'

तंबू में घुस रजाई ओढ़ने के बाद भी बहुत देर तक हम पर्दा खोलकर सामने ब्रह्मा, विष्णु, महेश पर्वत श्रृंखला पर जमी चटकीली बर्फ तथा आसमान में टिमटिमाते थाल भर तारों को देखते रहे। मौसम

रात भर इसी तरह खुला रहा तो सुबह हमारी यात्रा अच्छी हो जायेगी। बातें करते–करते ही हमें न जाने कब नींद लग गई।

अमरनाथ की ओर

16–8–2007 गुरुवार की सुबह बहुत सुहानी थी। अब शायद हमारा अच्छा समय आ रहा है। ईश्वर ने हमारी परीक्षा ली उसमें हम उत्तिर्ण हो गये हैं। रात भर बरसात न होने से कीचड़ समाप्त हो गया है। दुआयें, दवाईयां व भोजन के प्रभाव से मां का स्वास्थ्य व हौसला दोंनों बहुत बढ़िया थे। हमने प्रातः जल्दी ही निबट कर सारा सामान पैक कर लिया। कुंवर सा. के एक बैग की चेन आज कई बार दबाने के बाद भी नहीं लग पाई, तो बैग को चादर में बांध कर पोटली बना ली। सारा सामान सुबह कोई सात बजे ही उठा कर बेस कैम्प छोड़ गेट की ओर बढ़ गये। अभी घोड़ेवाले नहीं आये थे। पास के लंगर में सामान रख नाश्ता करने लगे। घोड़ेवाले आने लगे तो हम उनसे भावताव करने लगे। कुछ प्रयासों के बाद हमने चार घोड़े दो हजार रु. कुल राशि में सामानों सहित अमरनाथ जी तक के कर लिये। मां को क्षतिग्रस्त हाथ से घोड़े पर बैठने में परेशानी आई। यहां सुबह भारी ठंड के कारण हमने सारे गरम कपड़े पहन रखे थे। मां के साथ घोड़ा लेकर चलने वाले हट्टे–कट्टे किशोर ने सबसे छोटा बैग लिया। सवारी भी हलकी और बैग भी हलका। मैने दूसरे घोड़ेवालों की तरफदारी करते हुये उससे भारी बैग उठाने का आग्रह किया तो लड़का नेतागिरी के अंदाज में बोला, 'यह हमारा आपस का मामला है आप अपने काम से काम रखिये।' उस लड़के से आगे हमारी बात करने की हिम्मत नहीं हुई। दूसरे घोड़ेवाले भी उससे दब रहे थे। कोई न कोई बात तो होगी ही। पूरे रास्ते मां की चिंता रही। उतार–चढ़ाव में टोकते रहे,

'ध्यान से चल, मां गिर न जावे'।

घोड़े वाला कहता, 'आप चुपचाप बैठो बाबूजी। मां को अमरनाथ तक पहुंचाने की हमारी गारंटी है।'

हम प्रातः आठ बजे शेषनाग से चले थे। वॉवबल होते हुये गणेश टॉप चढ़े। वहां केन्द्रिय रिजर्व पुलिस बल वालों से गर्मपानी ग्रहण किया। धूप खिल आई और हमारे सारे गर्म कपड़े उतर कर बैगों में समा गये। घोड़े पर बैठे–बैठे अकड़ से गये। पौषपथरी से एक किमी पहले हम चारों ही घोड़ों से उतर कर पैदल चले। सीधा उतार है, भाग–भाग कर लंगर तक पहुंचे। इस एकमात्र लंगर पर स्थानीय मजदूरों को भोजन की अनुमति है। पौषपथरी में लंगर के भीतर से यात्रा मार्ग जाता है। यहां यात्रियों, मजदूरों एवं सामानों की पूरी जांच हुई। कुछ देर बाद हम प्लेटें उठा खाने पर टूट पड़े। साउथ इंडियन–इडली, डोसा, उपमा, उतप्पम, मेधुवड़ा, एवं पावभाजी, दहीबड़ा, पुड़ीभाजी, दालचावल, गुलाबजामुन, खीर, बरफी, चीलड़े, डिब्बाबंद मुरब्बे, चाय, गर्म पानी– क्या क्या लें न लें। मां ने आज व्रत रखा है। उसने साबूदाने की खीर एवं मुरब्बा ही लिया। हम सब ने भरपेट मनपसंद पकवान ग्रहण किये। घोड़वालों द्वारा दिया आधा घंटा पूरा हो गया और हम वापस यात्रा पर बढ़े। मन माफिक कुछ देर पैदल चले फिर घोड़ों पर बैठ गये।

पौषपथरी से पंचतरणी तक का रास्ता बहुत कम उतार–चढ़ाव वाला है। पंचतरणी में हम घोड़ों से उतर बेस कैम्प में अंदर चले गये। घोड़ेवाले कैम्प के बाहर से निकले। यहां घोड़ों को दाना खिलाया जाता है। दाने की बहुत सी दुकानें लगी हैं जिन पर गुड़, चना, पीली मक्का आदि बिक रहा है। लाल मक्का का भाव सोलह रु. किलो तथा चना का भाव चालीस रु. किलो है। हम बेस कैम्प में बसी तंबुओं की नगरी को देखते हुये दूसरे गेट से बाहर निकले। अब यहां रुकना तो हो नहीं रहा पौथे तो ले लें। उधार घोड़ेवाले हमारा इंतजार कर रहे थे तुरंत ही रवाना हो गये।

पंचतरणी से आगे रास्ते में गश्त कर रहे सैनिकों के लिये गरम भोजन के टिफिन जाते हैं। सेनावालों ने सभी घोड़ेवालों को एक–एक टिफिन पकड़ा दिया। पंचतरणी से संगम घाटी तक खड़ी चढ़ाई आती है। मां की सुरक्षा के ख्याल से उसके घोड़ेवाले का टिफिन मैंने अपने हाथ में ले लिया। रास्ते भर टिप्पनों पर मजाकबाजी चली। मेरे साथ चल रहा घोड़ेवाला चुटुकलेबाज था। किसी भी सैनिक को देखता और जोर से चिल्लाता,

'हम आपके लिये खाना लाये हैं, आकर ले जाओ।'

कुछ ने टिप्पन देख और कुछ ने समय देख मना कर दिया। दो बार सैनिक दौड़ कर नीचे आये और टिप्पन पर नं. पढ़कर बोले कि यह तो आगे के हैं। आधे रास्ते में सारे टिप्पन यथास्थान पहुँच ही गये। मैंने अपने हाथ से मिलेट्री वाले को टिप्पन थमाते हुये मजाक किया,

'खाने की खुशबू बहुत अच्छी है, इच्छा हो रही थी खा जाऊ पर आपका ध्यान आ गया।'

सैनिक भी मस्त था, 'आइये, आइये आप तो खाईये जी।'

मैं सारे रास्ते 'जय भोले' अभिवादन के रूप में बोल रहा था और कुंवर सा. 'जयहिंद', 'वंदेमातरम्' करते हुये आये। मुझे धार्मिक यात्रा में राजनैतिक नारा लगाना अच्छा नहीं लगता। यहां के घोड़ेवाले व मजदूर सब 'जयभोले' तो बोल लेते हैं पर अन्य नारों पर चिढ़ते हैं। मेरे व उनके मध्य इस बात पर मतभेद रहा।

'कश्मीरी नाराज हो जायेंगें तो भी अपना क्या कर लेंगे।'

यहां वे ज्यादा ही निडर हो गये थे। मेरे साथ चल रहा घोड़ेवाला अक्सर पाकिस्तान जिंदाबाद गीत गुनगुनाता रहता था। शायद वह भी हमें चिढ़ाने के लिये जानबूझ कर ऐसा कर रहा हो।

अमरनाथ में

हम साढ़े बारह बजे अमरनाथ पहुंच घोड़ों से उतरे। बहुत जिदकर घोड़ेवालों ने सौ रु. इनाम के भी लिये। वे बड़े प्रसन्न थे कि बहुत जल्दी पहुंच गये और उन्हें तुरंत ही वापसी की सवारियां मिल गई। आज यहां बर्फ का ग्लेशियर बहुत छोटा है। पूर्व में ग्लेशियर का पुल के रूप में उपयोग कर मार्ग बनाया जाता था आज यह जोखिम नहीं ली गई है। बर्फ की परत बहुत पतली हो गई है पता नहीं कहां से नदी में धंस जावे। यहां मानव द्धारा फैलाई गंदगी व प्रदूपण देख मन व्यथित हो उठा। कुंवर सा. ने घोड़ेवाले से एक लकड़ी ले ली थी। वे तुरंत ही बर्फ पर चलने का सपना पूरा करने लगे। यदि हम पैदल आते तो निश्चय ही हमारे पास छड़ी होती और अब तक कुछ बर्फ में भी चल लिये होते। घोड़ा स्टैण्ड के पास से ही अमरनाथ जी का मेला शुरू हो जाता है। एक व्यापारी तुरंत ही हमारे पास आया। उसने हमें गर्मपानी, स्नानघर तथा सामान रखने के कमरे की सुविधा पचास रु. में उपलब्ध करवाई। छोटे से कमरे में सामान पटक स्नान की तैयारी करने लगे। पास ही भट्टी लगी है जिस पर पानी गर्म हो रहा है। तीन फुट का बाथरुम चारों तरफ से प्लास्टिकशीट के पर्दे लगाकर बनाया गया हैं। थोड़ी आड़ हो जायेगी ठंडी हवाओं से भी बचेंगे ही।

कुछ देर आराम करने के बाद बर्फ पर चलकर फोटोग्राफी की। थोड़ी बरसात आई तो हमने हमारे किराये के कमरे में घुसकर अपने आप को भीगने से बचाया। सबसे पहले मैंने स्नान किया। अमरगंगा का बर्फीला पानी एक लोटा बदन पर डाला और तुरंत ही बाथरुम में घुस गर्म पानी से नहाया। सरसों के तेल की मालिश कर धुले हुये कपड़े पहने। तेज ठंडी हवाओं के बावजूद धूप निकल आने पर सर्दी नहीं लग रही थी। एक–एक कर सभी नहाये। बहिन ने मेहनत कर मां को नहलाया और कपड़े बदलाये। मैं सबके नहाकर निबटने के पूर्व ही बाजार में घूमकर रुकने की व्यवस्था देख आया। हम अमरगंगा के पूर्वी किनारे पर हैं। यहां से पश्चिमी ओर जाने के लिये पक्का आर.सी.सी. का पुल बना हुआ है। स्नान के बाद हम पुल पार कर दूसरी ओर के बाजार में चले गये। पूजा का सामान बेचनेवाले एक दुकानदार के पास हमने अपना सामान रखा तथा उससे दो थैलियों में पूजा बंधवाई। हमने दुकानदार से हमारे सामानों की रसीद भी ली ताकि हम दुकान न भूलें।

यहां तक आने के बाद भी दर्शन हो जाना इतना आसान नहीं है। अभी डेढ़ किमी सीधी चढ़ाई वाला रास्ता बाकी है। मार्ग के दोनों ओर जहां भी जगह बनी लंगर, दुकानें, रहने के तंबू, प्रशासनिक व मिलेट्री के तंबू तथा सुविधायें बनी हुई है। हम चारों ने ही दर्शनोपरांत ही भोजन करने का निश्चय किया है। मार्ग में कुछ आगे बढ़ते ही हमारी टांगे जवाब दे गई। मां व कुंवर सा. को अपेक्षाकृत ज्यादा तकलीफ हो रही थी। बारिश के से आसार बनने लगे थे तथा हम रैनकोट भी निकाल कर साथ नहीं लाये थे। मैं

मां के साथ कुछ आगे चल रहा था। मां की थकान देख मैंने उसको दो सौ रु. में पालकी कर पालकी में बिठा दिया। फिर मैं कुंवर सां के साथ चलने लगा। पहला मेडिकल कैम्प आते ही हम उसमें घुस गये। बहिन व कुंवर सा. लगातार कपूर सूंघ रहे थे। डाक्टर को यह बात बताई तो वे बहुत नाराज हुये। उन्होंने तुरंत सारा कपूर फिंकवा दिया। डाक्टर साहब का विचार था कि कपूर सूंघने से ही इन्हें तकलीफ हुई है। वहां कुंवर सा. को आक्सीजन लगाई। उनका बी.पी. ठीक निकला। एक गोली खाई तथा ग्लूकोज का पानी पीया। इन सब के बावजूद कुंवर सा. के पैर नहीं उठ रहे थे। दो चार कदम चलते ही उन्हें भारी घ ाबराहट होने लगती। मैंने उनकी स्थिति देख पालकी वाले को बुला लिया पर वे पालकी में नहीं बैठे। वे कई जैन तीर्थों पर पैदल यात्रायें कर चुके हैं, पांच दस किमी रोज पैदल घूमते हैं, उन्हें पूर्व में ऐसी परेशानी कभी नहीं आई। कुंवर सा. ने मुझे मां को संभालने के लिये आगे भेज दिया।

'जल्दी क्या है हम धीरे–धीरे पहुंच ही जायेंगे।'

मैं धीरे–धीरे चलता हुआ गुफा के अंदर पहुंचा। मां तब तक दर्शन करके हमारा इंतजार कर रही थी। गुफा में तैनात महिला पुलिस मां से उसके टूटे हाथ की दास्तान सुन रही थी। मां को यहां पहुंचे एक घंटे से भी ज्यादा हो गया है। उसे अभी तक कबूतर नहीं दिखाई दिये। वहां बैठी महिला पुलिस मां को समझा रही थी कि कुछ दिनों पूर्व यहां कबूतर थे अब मौसम गर्म होने से शायद वे नीचे चले गये हों। गुफा में पानी भी बहुत कम टपक रहा है तथा अमरगंगा में भी बहुत कम पानी बह रहा है। गुफा में पहले हम जहां जल की केटली भरते थे वहां आज बिल्कुल सूखा है। शिवलिंग सहित बर्फ की किसी भी मूर्ती का यहां कोई चिन्ह नहीं है। पता नहीं जलवायु में इतना परिवर्तन क्यों आ गया है? कई लोग यहां लगातार आ जा रहे हैलिकॉप्टर को इसका कारण मानते हैं। गुफा में इस वक्त दर्शनार्थी बिल. कुल नहीं हैं। मैं भी बहुत देर तक गुफा में रह प्रार्थना करता रहा। इस वर्ष यात्रा दो माह की कर दी गई है। मेरा मानना है कि यात्रा एक माह से ज्यादा की नहीं होनी चाहिये। इतने ही यात्री एक माह में दर्शन कर सकते है। व्यर्थ ही साधनों का दुरुपयोग हो रहा है। कुंवर सा. व बहिन के पहुंचने व दर्शन करने के बाद हमने कुछ फोटो लिये एवं सभी ने साथ पैदल वापसी यात्रा शुरु की। रास्ते के एक लंगर में नाश्ता किया। मां के व्रत है। लंगरवाले ने मां को आंवले का मुरब्बा खाने को दिया। हम धीरे–धीरे नीचे आ गये। हमारी आश्रय स्थल दुकान से कुछ पूर्व ही लगे लंगर पर दाल रोटी चावल तैयार थे। तीनों परिजनों ने ब्यालू का भोजन किया। भोजन करके हमने पास ही लगे नल से हमारी पानी की दोनों बोतलें भरी। हम हमारे आश्रय स्थल पहुंचे ही थे कि तड़ातड़ बारिश शुरु हो गई। ईश्वर जैसे हमारे मुकाम पर पहुंचने का ही इंतजार कर रहा था।

मैं इस दुकान को पहले ही आकर पसंद कर गया था। इस दुकान में अंदर तंबू में कंबल बिछाकर यात्रियों के सुलाने की व्यवस्था की गई है। ओढ़ने के लिये ठीक सी रजाइयां उपलब्ध है। तंबू के पीछे अमरगंगा बह रही है। वहीं एक छोटा बाथरुम सा बना हुआ है। पास ही भट्टी लगी है जिस पर हमेशा गर्म पानी उपलब्ध है। दुकान से कुछ दूरी पर ही लंगर तथा पीने के पानी का नल है। घोड़ा पालकी स्टैण्ड भी पास में और सबसे ज्यादा पसंद आया मुझे दुकानदार का व्यवहार। किराया बहुत मामूली मात्र पच्चीस रु. प्रति सवारी। रात रुकेंगें तो भाड़ा देगें। सामान रखने, दिन में उठने–बैठने का कोई चार्ज नहीं। बस पूजा सामग्री यहीं से खरीदनी है। कुंवर सा. लगातार आज ही बालटॉल पहुंचने पर जोर दे रहे थे और मैं 'जैसा समय होगा देखेंगें' कह कर टाल रहा था। अब रब के ऊपर तो कोई नहीं है न। पहले हमने दर्शनों में बहुत समय लगाया, फिर भी जिद नहीं छोड़ी तो ऊपरवाले ने आंधी और पानी ला दिया। चार बजे सायं जब हमने तंबू के परदे लगाये तो तंबू में अंधेरा हो गया। ऐसे में टॉर्च काम में आई। कमोबेश हम सभी ने दवाईयां खाई। तंबू की रस्सी पर गीले कपड़े सुखाये। हमने उजाले का साधन मांगा तो तंबू वाले ने लालटेन जला दिया जिसमें थोड़ी ही देर का केरोसीन था। सोने से पहले मैने तंबू वाले से पेशाब करने के बारे में पूछा। कश्मीरी तंबू वाले ने कहा,

'बड़ा पेशाब या छोटा पेशाब'।

इसके साथ ही उसने एक और दो उंगली उठाकर इशारा भी किया। मैं तुरंत उसका मतलब समझ गया। मैने कहा, 'छोटा पेशाब'।

'हां तो वह पीछे से ही कर लेना'।

हमारे लिये यह भाषा भी एक चुटुकला हो गई। तंबू मालिक कुछ देर बाद ही गायब हो गया जो हमें बड़ा बुरा लगा। उसकी पूरी दुकान तंबू सब पर हमारा कब्जा था। उसकी दुकान के आगे मात्र एक पर्दा लगा था। रात में सामने से तंबू बंद कर दिया और जरूरत पड़ने पर पीछे से पर्दा ऊचा करते रहे।

खाली समय में यात्रा चिंतन हुआ। मां को बहुत अफसोस है कि उसे खासकर यात्रा में बेटी से सेवा करवानी पड़ रही है। घोड़े पर बैठकर आने पर मां का हाथ सुन्न हो कर कांपने सा लगा। मां ने समझा कोई नई बीमारी हो गई है। हमने मां के हाथ की पौषपथरी में तथा यहां अमरनाथ में सरसों का तेल व बाम लगा कर मालिश की। धीरे–धीरे हाथ का कंपन खत्म हो गया। मां 'आगे उतार है पैदल चलेंगे' ऐसी जिद कर रही थी। पर मुझे तो पता है ना रास्ते का। मैंने मां को बालटॉल पालकी से भेजने के लिये पालकी वालों को एक हजार रु. लगा दिये हैं। वे शायद सुबह आ ही जायें। घोड़े वाले तीन बजे से ही हमारे पीछे पड़े है। दो सौ रु. घोड़े में तीन घंटे में बालटॉल उतार देंगे। मैं यहां आराम करना तथा अमरनाथ में रात्रि में रुकना चाहता था और कुंवर सा. एक दिन बचाना चाहते थे। आखिर बरसात ने मेरी बात रख ही ली।

पानी बरसा और खूब बरसा। हमारे तंबू के अंदर भी पानी आ गया। इधर उधर हो गीले से बचना पड़ा। रात पौने आठ बजे बारिश थमी। मैं यथासंभव गर्म कपड़े पहनने के बावजूद सर्दी से कंपकंपाता सा खाना खाने के लिये लंगर पर गया। पूरा मेला एकदम स्याह और वीरान। मेरे अलावा मार्ग में कोई प्राणी नहीं। मेरे को रास्ता देखने के लिये टॉर्च जलानी पड़ी। लंगर में जर्नेटर चला कर रोशनी की गई है। आठ–दस युवक खड़े–खड़े या कुर्सियों पर बैठ कर सिगरी में तापते हुये भोजन कर रहे हैं। ये सभी उज्जैन के आसपास के हैं तथा इस लंगर की आवास व्यवस्था में ही रुके हुये है। मैंने भी एक थाली में खाना लिया और एक कुर्सी पर बैठ तापते हुये खाने लगा। भोजन करने के नियत स्थान अर्थात् चौक में तो अभी सर्दी के मारे खड़ा रहना भी संभव नहीं है। यात्री नहीं आ रहे हैं, आज लंगर वालों के पास पुनः बहुत सारा खाना बच गया है। शिवलिंग पिघल जाने तथा यात्री कम आने के कारणों पर बहस चल रही है। मैंने भी अपनी बेबाक राय प्रस्तुत की। मैने यात्रा अवधि कम करने तथा हेलीकॉप्टर सेवा बंद करने पर विशेष जोर दिया। भोजन करने के बाद मैंने गर्म पानी पीया तथा साथ लाई बोतल भी गर्म पानी से भरी और वापस तंबू में जाकर सो गया।

रात अच्छी कटी। रात में बारिश नहीं आई। हमारी वापसी यात्रा शुरु होने के संकेत मिल गये।

बालटाल

ता. 17 अगस्त 2007 शुक्रवार हम मुंह अंधेरे ही उठ खुले मैदान में नित्य कर्मो से निवृत्त हुये। हमारा तंबू मालिक बहुत देर से आया। उसने पांच रु. में एक गर्म पानी की बोतल दी तो हमने मंजन भी कर लिया। हमें पता लगा कि घोड़ेवाले यहां नौ बजे के बाद ही आते हैं। साढ़े छः बजे तेज धूप खिली तो मैने सारे नम व गीले कपड़े विभिन्न जुगाड़ लगाकर सुखा दिये। साढ़े आठ बजे पालकी वाले आ गये। अभी आने के बाद वे पुनः 1500 रु. मांगने लगे तो मैंने मना कर दिया। साढ़े आठ बजे तक घोड़ेवाले आ गये और हमने पांच घोड़े 'चार सवारी तथा एक सामान के लिये' दो सौ रु. प्रति घोड़े में कर लिये। घोड़े तय होने के तुरंत बाद ही पालकीवाले हजार रु. में ही चलने को तैयार हो गये। अब मां की इच्छा पर उन्हें मना किया। मां स्वस्थ है तथा वह तो पैदल चलने को भी तैयार है।

सामान घोड़े पर बंधवाकर रवाना होने तक हमें नौ बज ही गये। घोड़ेवालों ने आपस में लड़ने के चक्कर में बहुत समय खराब किया। भारी सवारी को कोई नहीं बिठाना चाहता। संगम घाटी तक थोड़े चढ़ाव के बाद यात्रा के सबसे खतरनाक उतार को पार कर संगम तक पहुंचे। संगम पर बने पुल से पहले ही घोड़ेवालों ने हमें उतार दिया। आगे का संकरा रास्ता जो सीधी चढ़ाई है हमें पैदल ही चढ़नी है। इस घाटी में संगम फिल्म की शूटिंग हुई थी। यहां विशाल लंगर लगा है जिसमें यात्रियों के रुकने की व्यवस्था भी है। यहां सुरक्षाबलों के शिविर भी लगे हुये हैं। कठिन चढ़ाई तीन जगह आराम कर पार की ही। बाद में पुनः अश्वारूढ़ हुये। मां जिस घोड़े पर बैठी थी वह बहुत कमजोर था। उसके धीरे चलने के

कारण हमें भी बहुत बार रुकना पड़ा और हम अपेक्षाकृत ज्यादा समय में रास्ता तय कर पाये जिससे हम बालटॉल में बारह बजे वाले कनवे को नहीं पकड़ सके। आधे रास्ते में घोड़े विराम लेते हैं। दस्तूर के मुताबिक यहां घोड़ेवालों ने हमारे से चालीस रु. चायपानी के लिये। हमने अपने थैलों का नाश्ता किया तथा वहां बच्चों एवं घोड़ेवालों को भी दिया। अब तो इस वजन को कम करें। अमरनाथ यात्रा पूरी हो ही गई है।

अमरनाथ से चली नदी बालटाल तक साथ चलती है। मालूम हुआ कि यही झेलम नदी है जो श्रीनगर से होकर बहती है। अलग–अलग स्थानों पर नदियों के अलग–अलग नाम होते हैं। मौसम तथा पहाड़ का दृष्य बहुत सुहाना है। नदी में कई जगह बर्फ के ग्लेशियर जमे हुये हैं। रास्ते में तीखे उतार पर एक बार और घोड़े वालों ने हमें पैदल चलाया। उतार पर पैदल चलना घोड़े पर बैठकर चलने की अपेक्षा ज्यादा अच्छा है। उतार पर घोड़े से गिरने का भय रहता है, आगे पीछे से काठी बहुत मजबूती से पकड़नी पड़ती है जिससे हाथों में छाले तक हो जाते हैं तथा पूरा बदन दर्द करने लगता है। हम पैदल चलने के लिये निर्धारित मार्ग के बाद भी मस्ती से पैदल चलते रहे। बाद में घोड़ेवालो ने समय खराब होने से बचाने के लिये जोर देकर हमें घोड़ों पर बिठाया। बालटॉल में रास्ते में कई लंगर वाले आग्रह कर–करके बुला रहे थे। एक जगह रोक कर बीकानेरी नमकीन की दो–दो थैलियां दी गई। मैंने निवेदन भी किया,

'अब हम तो यात्रा कर आये और घोड़े पर बैठे हैं, ऊपर जाने वालों को देना।'

पर वे नहीं माने। यात्री कहां रखे हैं और उन्हें तो अपना स्टॉक खत्म करके जाना ही है। एक लंगर पर आठ दस चाकलेट दी गई। मैंने तो अपना यह सब घोड़ेवाले को दे दिया। हमारे पास रखा सामान ही खत्म होने के आसार नहीं है।

सामानों वाला घोड़ा सबसे आगे था, उसके बाद कुंवर साहब चल रहे थे। वे जहां खड़े मिले वहीं हम भी उतर गये। यह अमृतसरवालों का शानदार लंगर है। यहां बैठ कर भोजन करने के लिये मेज कुर्सियां लगाई गई है। सामने बहुत सारे तंबू और नदी की तरफ आधुनिक सुविधायें। लंगर के सेवादार बहुत ही आदर देने वाले। उन्होंने बताया कि श्रीनगर अगली बसें तीन बजे जायेंगी। अभी बारह ही बजे हैं। आध घंटा पहले भी पहुंच जाते तो बारह बजे के गेट से रवाना हो सकते थे। हमने पांडाल में ही सामान पटक मुंह हाथ धोये और भोजन किया। फिर सामने के तंबू में जाकर सामान फैला दिये। तंबू की रस्सीयों पर कपड़े सुखा दिये। मोबाइल चार्ज पर लगा दिया। लंगर से प्लायर मांग कर बैग की चेन ठीक की। यहां हमें पीने के लिये फिल्टर पानी की ठंडी बोतलें फ्रिज में से निकाल कर दी गई। थोड़ी देर पैर पसार कर लेटने के बाद कुंवर सा. व मैं घूमने निकले। सबसे पहले बस स्टैण्ड जाकर सफर की व्यवस्था देखी। चार बजे करीब गेट खुलेगा तभी सारे वाहन कनवे में जायेंगे। टैक्सी का भाड़ा दो सौ तथा बस का एक सौ दस रु. प्रति सवारी है।

मुझे मां के इलाज की चिंता थी। सुना था बालटॉल में प्रशासन चिकित्सा की बहुत अच्छी व्यवस्था करता है। हम जामा तलाशी दे मेटल डिक्टेटर से होते हुये बेस कैम्प में घुसे। कुंवर सा. फोन की दुकान में घुसकर फोन करने लगे और मैं अस्पताल को तलाशता बहुत दूर निकल गया। वास्तव में यहां पर अस्थाई चिकित्सालय ही बना दिया गया है। अलग अलग रोगों के अलग विभाग, बाह्य रोगी कक्ष, भर्ती सुविधा, एक्सरे, लेबोरेट्री, डा. आवास, डा. ड्यूटी कक्ष आदि। मैं हड्डी विभाग में पहुंचा। अभी वहां डा. साहब नहीं बैठे हैं पर ड्यूटी पर मौजूद व्यक्ति का प्रबल आग्रह है कि मैं पेशेन्ट को ले आऊ, डाक्टर साहब आ ही जायेंगे। यहां पेशेन्ट को लाने ले जाने के लिये एम्बुलेंस भी उपलब्ध है। मैं एम्बुलेंस चालक को मां को यहां लाने के लिये तैयार नहीं कर सका। कोई दो किमी चढ़ाई वाला रास्ता, मेरी ही जान सूख गई। मां कैसे आयेगी। यहां कोई यातायात का साधन ऑटो आदि तो चलता नहीं है। मैं वापस तंबू में लौटा तो कुंवर सा. मेरा ही इंतजार कर रहे थे। मेरा कुछ देर टेलीफोन बूथ पर इंतजार कर वे असमंजस में लौट आये। मैने यहां के अस्पताल की जानकारी दी। हमारे तंबू से सौ फुट ऊपर और मात्र एक फर्लांग दूर यह रहा अस्पताल। पर यहां तारबंदी हो रही है। जाने का एक मात्र गेट बहुत दूर है। मैंने मां से अस्पताल पैदल चलने के लिये कहा तो उसने भी मना कर दिया। आज इतना समय भी नहीं है, चलो

कल श्रीनगर में किसी अस्पताल में दिखायेंगें। वैसे भी मां के हाथ में दर्द नहीं है, सूजन बहुत कम हो गई है। उसके हाथ में पट्टी बंधी हुई है और गोली दवा भी चल ही रही है।

लंगर में छोटे–मोटे दवाखाने की भी व्यवस्था होती है। इस लंगर में भी सामने की ओर दवा की दुकान या डिस्पेंसरी जैसा कुछ दिख रहा है। मैं घूमकर आया जब से बुखार सा महसूस कर रहा हूं। झट दवा की दुकान पर पहुंचा। वहां मौजूद सज्जन ने जाते ही थर्मामीटर लगा दिया।

'तापमान 99 है, कोई खास बात नहीं है। एक बुखार की गोली खा लो।'

मेरे पास शेषनाग मिलेट्री अस्पताल से मिली एक गोली रखी थी। मैंने वह निकाल कर कहा कि यह खा लेता हूं। गोली देखते ही सज्जन नाराज हो बोले,

'ये गोली मत खाना, बेकार है, कहां से ली थी।'

मैंने बड़े फख्र से बताया, 'मिलेट्री अस्पताल से।'

तब भी सज्जन ने गोली खाने से मना कर दिया। बोले,

'सब कमीशन का माल आता है।'

ऐसे ही शब्द हमें मिलेट्री डाक्टर से जे.के. सरकार के अस्पताल एवं लंगर वालों के बारे में सुनने को मिले थे। सेवा कार्यों में भी एक दूसरे की बुराई। खैर मैं समय गुजारने के लिये बातें करने लगा और मैंने मां के साथ घटी दुर्घटना की उन्हें जानकारी दे दी। फिर तो सज्जन मां को तुरंत यहां ला कर, उनके मालिश करने वाले को दिखाने का प्रबल आग्रह करने लगे।

मैं वापस तंबू में आया तो कुंवर सा. व मां को बगल के डा. सा. के पास बैठे पाया। यह व्यवस्था भी इसी लंगर के साथ है। डा. सा. ने कुंवर सा. का बी. पी. नापा जो सामान्य निकला। मां को उन्होंने एक्सरे करवाने के बाद ही कुछ इलाज कराने की सलाह दी। लगे हाथ मैंने भी बुखार के बारे में पूछ लिया। उन्होंने मुझे कुछ देर आराम करने की सलाह दीं। थकान से तापमान बढ़ जाता है। डा. सा. मुझे बहुत अच्छे लगे जिन्होंने बिना कोई दवा दिये हम सबको स्वस्थ रहने के उपाय बता दिये। न जाने क्यों मैं पुनः मां के साथ लंगर के मालिशिये के पास चला गया। वहां हाथ की पट्टी खोलकर विशेष तेल से चोटग्रस्त हाथ की मालिश की गई। इस अवधि में मां दर्द से कराहती रही। मालिश के बाद रुई का फाहा लगाकर जोर से पट्टी बांध दी गई और कह दिया, 'अब आपका हाथ ठीक हो गया है, घर जाकर पट्टी खोल लेना।' मां व मेरे को दोनों को उसके इलाज पर संदेह था जो आगे जाकर सच साबित हुआ।

दुर्गानाग मंदिर

ढाई बजे लंगर से एक घोड़े पर सामान लादकर बस स्टैंड पहुंचे। वहां खड़ी एक लगभग खाली प्राइवेट बस में सामान रख कर सीट रोककर बैठ गये। थोड़ी देर बाद आठ दस मिलेट्री के जवान उसी बस में आ बैठे। सवारियां कम ही नजर आ रही है। यहां सवारियां न होने पर बसें रद्ध भी हो जाती हैं। तभी कंडक्टर आया। उसने सभी को संबोधित करते हुये कहा कि रास्ते की सवारी न बैठे। किराया पूरा श्रीनगर का ही लगेगा। झट से दस सीटें खाली हो गई। अब तो बस जाना मुश्किल लग रहा है। कुंवर सा. ने टैक्सीवालों से संम्पर्क किया और टैक्सी का जुगाड़ बैठ गया। 6 सवारियां दूसरी और चार हमारी। टैक्सीवाले को बारह सौ रु. देने हैं। झट सामान बोलेरो में लाकर जमाये। हमने टैक्सी वाले से नाग मंदिर या डल गेट उतारने की भी बात कर ली।

थोड़ी देर में ही सहयात्रियों से पहचान हो गई। वाहन चालक मुसलमान है बाकी सब सवारियां हिन्दु। एक युवा आठवीं बार अमरनाथ हो कर आया है। यह एक झोला मात्र लेकर अकेला आता है। पहलगांव की ओर से चढ़ता है तथा बालटॉल से उतरता है। अभी तक सारी यात्रायें पैदल ही की है। दो युवा पंजाब से श्रीनगर आकर खाती का काम कर रहे हैं। तीन अन्य यात्री रिश्तेदार हैं। जिनमें दो महिलायें हैं। चारों महिलायें बीच की सीट पर बैठी है। कुंवर सा. व मेरे को पीछे बैठना पड़ा। रास्ते में मेरी बहिन ने वाहन चालक को सिगरेट पीने से रोक कर बड़ी हिम्मत का परिचय दिया। यहां कश्मीर में सिगरेट पीने की लत बहुत ज्यादा है जिससे हमें कई बार परेशानी हुई है। रास्ते में चायपानी के लिये गाड़ी रुकी। यहां तीनों होटल मुसलमानों के ही थे पर उन पर 'अमरनाथ यात्रियों का स्वागत है' बोर्ड

टंगा हुआ है। खाने की शंकाओं के चलते हमने मात्र मठरी खरीद कर खाई बाकी अपने बैग में से सामान निकाल कर ब्यालू कर ली। श्रीनगर उजाले में पहुंचना संभव नहीं लग रहा था।

श्रीनगर पहुंचते–पहुंचते बत्तियां जलने लगी। मिलेट्री वालों ने सीधी सड़क बंद कर रखी है। चालक झल्लाया, 'अब 45 किमी घुमाकर गाड़ी लाऊ क्या?' फिर उसने हमारे साथ बैठे परिवार वाले युवा से कहा कि उन्हें जाकर समझाओ, 'आपको बस यहीं जाना है और आपके साथ महिलायें हैं।' चालक की तरकीब काम कर गई, उसका डीजल तथा हमारा एक घंटा समय बच गया। कश्मीर में रहने वाली पांचों सवारियां उतारने के बाद गाड़ी डल गेट की तरफ बढ़ी। युवा अमरनाथ यात्री हमारे साथ नागमंदिर की व्यवस्थाओं में रुकने को तैयार हो गया। जीप चालक ने हमें कोई एक किमी पहले ही उतार दिया। मैंने पास खड़े पुलिस वाले से पूछा तो उसने बताया कि नागमंदिर इस साइड है और अभी दूर है। हम वापस जीप में लद गये, चालक की नाराजगी के बावजूद ठेठ नागमंदिर के यात्री विश्रामालय के सामने ही हमने जीप छोड़ी। मैं तुरंत ही पूछता हुआ कार्यालय पहुंचा। वहां मैनेजर ने इशारा कर दिया कि सामान ले आओ, जगह मिल जायेगी। मैं पुनः नीचे आया और हम सब सामानों सहित प्रथम मंजिल के कार्यालय में पहुंचे। कुछ देखाभाली के बाद हमने चार बिस्तर वाला कमरा साठ रु. प्रति बिस्तर में ले लिया। हमारा पांचवा साथी अलग से अटैच लैटबाथ कमरा तीन सौ रु. रोज में लेकर रुका। यहां कमरों में सारे शौचालय विदेशी तर्ज पर बनाये गये हैं जिनमें हमें तकलीफ रहती है।

आतंक

रात साढ़े आठ बजे कुंवर सा. के साथ मैं नीचे बाजार में आया। कैमरे में रील बदलवानी है। बस या हवाई जहाज के वापसी टिकट की जानकारी करनी है, कल गुलमर्ग घूमने जाने की व्यवस्था देखनी है और मुझे रोटी खानी है। यहां पास ही पांच छः 'केवल शाकाहारी' तंदूरी रोटी वाले भोजनालय हैं। राधाकृष्ण होटल पर बहुत भीड़ देख हमने उसके सर्वश्रेष्ठ होने की कल्पना की और हम दोनों एक खाली मेज पर जा बैठे। थोड़ी देर में ही वहां पुलिस की दो गाड़ियां सायरन बजाती हुई पहुंची। एक अधिकारी ने उतरते ही सब ग्राहकों को तुरंत होटल खाली करने का आदेश दे दिया। होटल मालिक ने कारण पूछा तो बताया गया,

'हमारे पास फोन आया है, इस होटल में बम रखा है।'

अब सब के बीच अफरा–तफरी मच गई। इतनी देर में पुलिस वाले हमारी मेज कुर्सियों के आसपास हाथ वाला मेटल डिक्टेटर घुमा चुके थे। दो पुलिस वाले रसोई में घुस गये और एक नगदी काउंटर पर। सभी ग्राहकों के साथ हम भी होटल से बाहर निकल सड़क के दूसरी ओर खड़े हो तमाशा देखने लगे। तुरत–फुरत ही मिलेट्री की गाड़ियां, बम निरोधक दस्ता और फायर ब्रिगेड आकर खड़े हो गये। सारे बाजार में भीड़ इकठ्ठी हो गई तथा सुरक्षाबलों ने इस सड़क से यातायात बंद कर दिया। सब चिंतित थे, पर वाह रे होटल के बहादुर मालिक, वे अपने काउंटर पर ही डटे रहे। वे लगातार कहते रहे,

'यहां बम कहीं रखा ही नहीं जा सकता। यह सब अफवाह है। आप चेक कर लीजिये।'

बम मिला ही नहीं पर होटल का तो बहुत सारा नुकसान हो ही गया। दुश्मनों के मंसूबे पूरे हो गये।

कुछ शांति होने के बाद मैंने पास के ही दूसरे होटल में दाल रोटी खाई। बाद में हमने प्रयास कर एक मेडिकल स्टोर ढूंढा। कुंवर सा. की तबियत यहां पहाड़ से नीचे आने के बाद भी ठीक नहीं हुई है। उन्होंने कोटा अपने फेमिली डा. स्वामी से फोन पर बात की। डा. द्वारा बताई गोली हम नहीं समझ सके तो हमने फोन सीधा मेडिकल स्टोर वाले लड़के को ही थमा दिया। डा. सा. ने स्ट्रुजिल नाम की दो गोलियां रोज खाने की सलाह दी है।

ता. 18. 8. 2007. शनिवार आराम से ही उठे। दुर्गा नागमंदिर में हो रहे भजनों को हम दो घंटे से लेटे–लेटे सुन रहे हैं। कश्मीर घाटी में, राजधानी में, माइक लगा कर ऐसे भजन गाना हमारी कल्पना के बाहर की बात है। हमने नहाने के साथ ही बहुत सारे कपड़े भी धोये। जिन्हें सुखाने के लिये कमरे के

सामानों का दुरुपयोग किया। मां के हाथ में दर्द बढ़ गया है, हमें आज उसे दिखाने अस्पताल जाना है। इस हेतु मैंने रामू के मित्र प्रद्युम्न गौतम से बारां फोन कर सलाह ली। प्रद्युम्न कुछ दिनों पूर्व बी.एड. करने के लिये यहीं रुका हुआ था। यहां बरजुल्लाह नामक इलाके में कश्मीर का सर्वश्रेप्ठ हड्डी का अस्पताल गवर्नमेंट बोन एंड ज्वाइंट सर्जरी के नाम से है। धर्मशाला मैनेजर से हमने अस्पताल की जानकारी ली। नीचे आकर सबसे पहले हम नाग मंदिर दर्शनार्थ गये। मंदिर भगवान शिव व मां पार्वती को समर्पित है। ऊचे मंदिर पर विशाल प्राचीन शिवलिंग स्थापित है। पास ही माताजी का मंदिर बना हुआ है। प्रवेश द्वार से ही चमकते पानी का प्राकृतिक कुंड दिखाई देता है। कुंवर सा. मंदिर में ही नहीं गये। यह बात मुझे अ खरी।

चिकित्सालय

सड़क पर आ पचास रु. में ऑटो कर हम अस्पताल पहुंचे। ओ.पी.डी. दस बजे खुलती है और वहां अभी से लंबी लाइन लग गई है। मैंने जानकारी लेने के लिये वहां पार्किंग के ठेकेदार से बातचीत शुरु की। उससे जानकारी मिली की इमरजेंसी रुम में हमेशा डाक्टर बैठते हैं। वहां देख लिया तो आपका काम फटाफट हो जायेगा नहीं तो यहां दिन भर लग ही जायेगा। मैंने कुंवर सा. से बात की। वे स्वयं वेशभूषा से डा. की तरह लग रहे थे। वे अवश्य डा. को पटा लेंगे। हम पांच रु. की रसीद कटाकर फाइल बनवा डा. के कमरे में चले गये। डा. ने मां को देखते ही पहले हमारे को डांटा।

'तीन दिन हो गये हैं, अभी तक आपको इनकी चूड़ियां और अंगुठियां तक उतारने की याद नहीं आई। फिर क्या उंगली काटकर निकालोगे।'

वास्तव में हमें तो अभी तक इस बात का ख्याल ही नहीं आया था और न ही दूसरे डा. ने यह बात ध्यान दिलाई। स्पेशलिस्ट को ही वास्तव में बहुत सी बातों का ज्ञान होता है। हमने बहुत प्रयास कर अंगुठियां निकाली, चूड़ियां तो तोड़नी ही पड़ी। इसके बाद एक्सरे करवाया। डा. ने एक्सरे देखते ही फ्रेक्चर बता दिया और एक महिने का प्लास्तर और दवाइयां लिख दी। हमने समय बचाने के लिये प्लास्तर बांधने वाले कम्पाउंडर को उत्कोच देनी चाही पर हम सफल नहीं हुये।

आज इस अस्पताल के जूनियर डा. हड़ताल पर हैं। इस आशय का एक नोटिस अंग्रेजी तथा उर्दु में यहां के नोटिस बोर्ड पर लगा हुआ है। इस के बावजूद हमारा काम इतनी जल्दी हो गया यह भोलेनाथ की कृपा ही है। अब हमें प्लास्तर बंधवाना है, हम कमरे के बाहर जाकर सफाई होने का इंतजार करने लगे। साढ़े दस बजे स्टाफ आया और मां का प्लास्तर बांधा गया। मैं तुरंत लौटने के मूड में था पर कुंवर सा. पुनः मां को लेकर डा. के पास चले गये। अब उस कुर्सी पर बड़े डा. सा. बैठे हुये थे। अम. रनाथ यात्री होने के नाते उन्होंने अच्छा व्यवहार किया। दुबारा हाथ देखा तथा दवाइयां भी बदल दी। इसी समय वहां बीस पच्चीस कश्मीरी युवकों का झुंड आया। वे बहुत उत्तेजित थे तथा किसी को ढूंढ रहे थे। वे सब शोर मचाते हुये सीढ़ियां चढ़ दूसरी मंजिल पर चले गये। इनके जाने के थोड़ी देर बाद ही पुलिस एक खूंखार से दिखने वाले व्यक्ति को डाक्टरी चेक अप के लिये लाई। इस कैदी के साथ भी उसके समर्थकों की भीड़ थी। मुझे माहौल खराब होंने का अंदेशा हुआ और हम जल्दी से अस्पताल से बाहर निकल लिये। ऑटो रिक्शा कर साढ़े ग्यारह बजे नागमंदिर के पास उतरे। ऊपर कमरे में जाने से पूर्व हमने भोजन करना उचित समझा और हम राधाकृष्ण होटल में घुस गये। रात की घटना के मद्देनजर यहां अभी भी पहरा है। होटल में घुसते ही हमारी दूसरी परेशानी शुरु हो गई। मां बहिन तथा कुंवर सा. तीनों ब्यालू करते हैं तथा प्याज लहसुन नहीं खाते। कुंवर सा. व बहिन तो जमीनकंद सहित और भी बहुत सारी सब्जियां व सलाद नहीं लेते हैं। होटलवाले ने बताया कि प्याज तो सभी सब्जियों डालना ही पड़ता है, हां उड़द की दाल बिना लहसुन प्याज की मिल सकती है। मैंने हरी सब्जी से और तीनों ने उड़द की दाल से रोटियां खाई।

कमरे में जाकर एक डेढ़ घंटे आराम करने के बाद घूमने जाने के विषय में विचार विमर्श किया। मैंने मां के साथ यहां कमरे में रुकने तथा बहिन व कुंवर सा. को घूमने जाने का प्रस्ताव रखा। कुंवर सा. मुझे भी साथ ले जाना चाहते हैं, फिर मां की इच्छा भी घूमने जाने की लगी।

श्रीनगर भ्रमण

'मैं यहां दिन भर पड़ी पड़ी क्या करूंगी? टूटा तो हाथ है, पैर तो सलामत हैं।' लिहाजा हम चारों नीचे सड़क पर आ ऑटो वालों से बात करने लगे। ऑटो किराये ज्यादा लग रहे थे। एक स्थानीय निवासी ने बिना मांगे सलाह दी कि हर जगह मिनी बस मिल जाती है जिसका किराया प्रति सवारी दो से चार रु. तक है। कहीं से भी बैठो और उतरो। इस सलाह के बाद हम डल गेट तक पैदल गये और वहां से मिनी बस में बैठ लालचौक उतरे। लालचौक ऐतिहासिक और दर्शनीय स्थान है। यह श्रीनगर का ह्रदय स्थल कहलाता है। यहां बहुत सारे शुद्ध शाकाहारी भोजनालय तथा अच्छे होटल दिखाई दिये। हम राजस्थान के यात्री लालचौक में भी रुक सकते हैं। यहां कश्मीरी कलात्मक सामानों के दुकानदारों ने हमें खरीददारी के लिये बुला–बुला कर तंग कर दिया। मैंने एक जला हुआ भवन बताकर कहा कि यहां हिन्दु धर्मशाला थी जिसमें मैं 1986 में ठहरा था। हमारा लक्ष्य आदिल कादल का हनुमान जी मंदिर देखना है। यहां मंदिर में अमरनाथ यात्रियों के आवास व भोजन की व्यवस्था होती है। मेरी इच्छा छड़ी मुबारक दर्शन करने की है, शायद हनुमानजी के मंदिर पर कोई जानकारी मिल सके। हमने एक पुलिस वाले से पूछा और हम पैदल ही झेलम नदी पर बना आदिलकादिल पुल पार कर हनुमान मंदिर पहुंच गये। नदी तट पर प्राचीन छोटा सा मंदिर है। सुरक्षा जांच की यहां भी पूरी व्यवस्था है। यहां हनुमानजी के अतिरिक्त भगवान राम, लक्ष्मण तथा सीता माता के दर्शन हुये। छड़ी मुबारक की यहां मुझे कोई जानकारी नहीं मिल सकी। यहां मंदिर परिसर में यात्रियों को सोने की इजाजत है तथा अभी यात्रा के दौरान लंगर चलता है।

मंदिर से बाहर आ हम श्रीनगर के मुगल गार्डन्स घूमने जाने के लिये बस तलाशने लगे। यहां से बागों के लिये कोई बस नहीं है पर जनता ने हमें 'आगे मिलेगी' बता–बता कर कोई दो किमी पैदल चलवा दिया। हम दूसरे पुल से झेलम पार कर एक संकरे बाजार में पहुंचे। वहां से भी हमें सीधी बागों के लिये कोई बस नहीं मिली। एक भले मानुष ने हमें समझाया कि गार्डन्स के लिये बसें सिर्फ डल गेट से ही मिलती है। आप कोई भी बस पकड़ डल गेट चले जाओ। ऐसा भला मानुष हमें पहले मिल गया होता तो दो किमी पैदल तो नहीं चलना पड़ता। एक चौराहे पर जा खाली बस में बैठे। सवारियों के इंतजार में बस कोई 15 मिनट धूप में खड़ी रही और हम इतनी देर में ही गर्मी के मारे पसीने से नहा गये। बस से हम डलगेट उतर थोड़ा और पैदल चल झील के किनारे की सड़क पर पहुंच गये। यहां से अंतिम बाग शालीमार बाग तक की बसें मिलती है। हमने सबसे पहले शालीमार बाग ही देखने का निश्चय किया। कई बसें निकलने के बाद खाली सीट वाली बस में हम बैठे। कंडक्टर ने आठ रु. प्रति सवारी का टिकट बनाया जो हमें बहुत ज्यादा लगा। पूरे चालीस मिनट के सफर के बाद बस के अंतिम पड़ाव पर हम उतरे जब तक बस में गिनी चुनी सवारियों ही बची थी। आधा श्रीनगर हमने बस में बैठे–बैठे ही देख लिया।

मुगल शासन में डल झील के पूर्वी किनारे पर बनवाये बाग–चश्मेशाही, निशात शालीमार तथा परीमहल मुगल गार्डन्स के नाम से जाने जाते हैं। बागों की खूबसूरती विश्व प्रसिद्ध है। सभी बागों में टिकट से प्रवेश है। शालीमार गार्डन में दस पंद्रह मिनट फव्वारों के साथ फोटो खींचने व घूमने फिरने में हमारा उत्साह बना रहा फिर हमें क्रमशः थकान आती चली गई। कुंवर सा. सबसे ज्यादा परेशान थे। वे हमें बार–बार वापस चलने के लिये कहते रहे और हम बस थोड़ा सा और है कहते हुये बाग के सर्वोच्च स्थान तक पहुंच गये जहां से पहाड़ी से एक मोटे पाइप द्वारा नहर में पानी डाला गया है। बाग से वापस लौटने में ज्यादा समय नहीं लगा। बाहर निकल डल झील के किनारे बने लकड़ी के गोल प्लेटफॉर्म पर चले गये। कुछ देर तक छिछले पानी में मछलियां देखते रहे। यहां होटलवाले, फोटोवाले, नाववाले बहुत जान खाते हैं। कुछ खाने की इच्छा थी तो एक ठेलेपर बन रहे मोटे नमकीन सेव लिये और तो कोई जैन भोजन यहां मिलता नहीं।

निशात बाग हम ऑटोरिक्शा कर पहुंचे। बहुत बड़ा व सुंदर बाग, पर थकान और समय की कमी क्या देखें? चश्मे–शाही जाने की इच्छा को भी इसीलिये मारना पड़ा। चश्में–शाही वैसे भी मुख्य सड़क से एक किमी हटकर है। घूमने के लिये सबसे जरूरी चीज हमारे पांवों की ताकत हमारे पास नहीं रही इसलिये हमने घूमने का विचार रद्ध कर वापस लौटने हेतु साधन ढूंढना शुरु किया। यतीश ने कोटा से

कुंवर साहब को नत्थू स्वीट्स का पता दिया था जहां का भोजन एवं मिठाइयां लाजवाब है। अब हमें वहीं जाना है। यह दुकान हमारे रास्ते में ही पड़ेगी। मिनी बस स्टैण्ड से कोई आध घंटे बाद खाली बस मिल सकी। बस कंडक्टर से हमने पहले ही नत्थू स्वीट्स पर उतारने को कह दिया था फिर भी हमें काफी आगे उतारा गया और पुनः पैदल वापस चल कुछ पूछताछ कर नत्थू स्वीट्स पर पहुंचे। यतीश सही ही तारीफ कर रहा था। विशाल दुकान, बैठने की उत्तम व्यवस्था तथा सुविधायें भी। हमारी होशियार बहिन जरूरत के सब साधन स्वयं ही ढूंढ लेती है। कुछ आराम करने के बाद खाने के बारे में पूछताछ की। शाम का खाना सात बजे बाद बनता है। प्याज लहसुन तथा वनस्पति घी का कहीं प्रयोग नहीं होता। सब सही है पर ब्यालू का क्या होगा। हमने यहां से मिठाई खरीदी तथा ऑटो कर नाग मंदिर पहुंचे। वहीं होटल में बैठ उड़द की दाल व रोटियां खाई गई। थकान बहुत ज्यादा थी कमरे में जा लेटे। कुछ देर बाद फल एवं मिठाईयां खाते हुये कल के कार्यक्रम पर विचार विमर्श करने लगे।

कुंवर सा. की तीव्र इच्छा गुलमर्ग जाने की है। मेरा कोई विरोध नहीं था पर हालात प्रतिकूल हैं। हमारी थकी हुई टांगे तथा मां का हाथ। वे दोनों हमारे बिना भी नहीं जाना चाहते। गुलमर्ग पिच्यानवे किमी का सफर, दिनभर का कार्यक्रम और मोटा खर्च। क्या हम उसका पूरा आनंद ले पायेंगें? बहस करते हुये हम बाजार में आ गये। एक ट्रेवल एजेन्सी वाले से जानकारी ली। तीन हजार से कम में टैक्सी नहीं जायेगी। सुबह जल्दी बसें भी जाती है। यदि गुलमर्ग न जायें तो हमारे पास यहां श्रीनगर में घूमने की बहुत जगह है। हाजीअली, शंकराचार्य मंदिर, परीमहल, चश्मेशाही, डल झील में बोटिंग और खरीददारी। हमारे पास दिन तो एक ही बचा है। गुलमर्ग रद्ध हो गया, साढ़े नौ बजे हम कमरे में आकर सो गये।

रात नींद अच्छी आई। ता. 19–8–2007 रविवार पांच बजे भजनों की आवाज से नींद खुली। सारे भजन वही हैं जो हम हमारे घरों में गाते हैं। बड़ा अच्छा लगा। कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत एक है। आज हमने बहुत सारे कपड़े धोये और उन्हें सुखाने के लिये कमरे का जमकर दुरुपयोग किया। हमने साढ़े आठ बजे धर्मशाला छोड़ी। नीचे आ मंदिर में दर्शन किये। सड़क पर आने तक मैंने कुंवर सा. को शंकराचार्य मंदिर चलने के लिये राजी कर लिया। रविवार के कारण बाजार बंद हैं तथा चहल–पहल नहीं है। ऑटो करने में बहुत समय लगा। हमने एक सौ अस्सी रु. में शंकराचार्य मंदिर दर्शन कराने के बाद डल झील के किनारे छोड़ने तक का ऑटो किया। शंकराचार्य मंदिर आतंकवादियों की हिट लिस्ट में है अतः यहां विशेष जांच एवं सुरक्षा प्रबंध हैं। पहाड़ी के नीचे ही गेट बना हुआ है। जहां सुरक्षाकर्मी तैनात रहते हैं। जांच के बाद ऑटो में बैठ पहाड़ी रास्ते पर चढ़ाई पर चले। चार सवारी के साथ ऑटो को पहाड़ी चढ़ने मे बहुत परेशानी आई। घुमावदार रोड पर हमें बहुत समय लगा। यहां पूरी सड़क के दोनों ओर सघन हरियाली है। फलों फूलों से पेड़ लदे हुये हैं। ऊंचाई पर जाने के बाद पूरा श्रीनगर शहर व डल झील का विहंगम दृश्य दिखाई देता हैं। अगली सुरक्षा चौकी पर रिक्शा रोक हमें उतारा गया। अब यहां से सीढ़ियां चढ़ कर जाना है। हमारे पास कैमरा, मोबाइल, तथा बैग है जिन्हें ऊपर ले जाना मना है। ऑटो वाले के ऊपर हमें विश्वास नहीं है। सुरक्षाकर्मी ने बैग जमा कर लिये पर कैमरा व मोबाइल र खने की उन्हें अनुमति नहीं है। बातचीत में एक राजस्थानी पुलिसकर्मी से दोस्ती की। बहिन शकुंतला ने भी एक महिला पुलिसकर्मी को पटाया और हम अपना कैमरा व मोबाइल उनको संभलाकर मंदिर दर्शनार्थ प्रस्थान कर सके। बहुत सारी सीढ़ियां चढ़ने के बाद अंतिम नाके पर पहुंचे वहां पुनः जामा तलाशी हुई। मंदिर चौक मे खीर का प्रसाद बांटा जा रहा है, यहां श्रद्धालुओं की भीड़ लगी हैं। हमने यहां दस रु. की प्रसाद की थैली खरीदी एवं हजारों वर्प पूर्व बनी ऊंची –ऊंची पेढ़ियां चढ़ कर गर्भगृह तक पहुंचे। यहां विशाल आकार का शिवलिंग स्थापित है। मंदिर के अंदर दो पुजारी कार्यरत हैं। दर्शन के बाद बाहर आकर हमने श्रीनगर की इस सर्वाधिक ऊंचाई से शहर को देखा।

शिव मंदिर के पास बने समाधि स्थल पर शंकराचार्यजी के पदचिन्ह स्थापित हैं। यहां के पुजारीजी ने बताया कि यहां शंकराचार्य जी महाराज ने तपस्या की थी। दर्शन–पूजन के बाद हमने वहां खीर ग्रहण की तथा कुछ देर बैठ मौसम का आनंद लिया। कुल एक घंटे में ही हम ऑटों में आ बैठे फिर भी ऑटो वाले ने देर से आने का उलाहना दिया। दस मिनट में ही हम डल झील के एक घाट पर उतर गये जहां कई शिकारे वाले खड़े थे। हमें डल झील की सैर करनी है। भावताव करने लगे। ऑटो चालक वहीं जमा

रहा और भावताव में हस्तक्षेप करता रहा। जरूर यह कमीशन के चक्कर में है। हम सैर का कार्यक्रम स्थगित कर सामने के बगीचे में जा बैठे। यह मछलीघर का भवन हैं, आज मछलीघर बंद है नहीं तो इसी को देख लेते। बहुत देर बाद ऑटो चालक के चले जाने के बाद 175 रु. में एक बढ़िया शिकारा दो घंटे में दस प्वाइंट सैर कराने की बात करके किया। शिकारा वैसा ही था जैसा हम फिल्मों में देखते व उनमें कभी बैठेंगें ऐसी हसरत किया करते थे। साफ सुथरे रंगीन गद्दीदार सोफे या पलंग जैसा। बड़े गर्व के साथ उसमें जा लेटे। थोड़ी फोटोग्राफी भी की। शिकारा झील में बढ़ते ही कई चलती फिरती दुकानें हमारे नजदीक आने लगी। एक नौका से पापकार्न खरीदी। एक केसर व्यापारी ने आध घंटे तक जान खा मुझे पटा लिया। दिखाई तो बिल्कुल असली और दे दी नकली। सौ रु. मात्र में दस ग्राम। जाते–जाते वह हमारे शिकारा चालक को कमीशन दे गया। मैंने चालक से पूछ ही लिया,

'कितने रु. दिये'।

चालक बोला, 'नहीं तो, वह तो हुक्का पीने आया था।'

जान बूझ कर लुटने का मुझे अहसास हो गया।

इस झील के बीच में बड़ी–बड़ी नावों पर शानदार फाइव स्टार होटल जिन्हें हाउस बोट कहते हैं, चलते हैं। इनके किराये दस हजार रु. प्रति कमरे तक हैं। इनमें से कई हाउस बोट पर फिल्मों की शूटिंग हो चुकी है। बोट वालों ने अपना नाम फिल्म के नाम पर ही रख लिया है। यहां बीच में एक नाव पर कैफे बना हुआ है। वहां हम कुछ खा पी नहीं सकते थे, हमने उधर जाने से मना कर दिया। आगे एक बोट से स्केटिंग की सुविधा है। दो सौ रु. प्रति व्यक्ति। कैमरे वाले का चार्ज अलग। रोमांचक खेल जिसे खेलने की मेरी जवानी की तमन्ना थी, पर अभी नहीं जा सकता। हमारा शिकारा पुराने जमाने के राजा महाराजाओं के द्वारा बनाये कबूतर खाने के आगे से गुजरा। फाइवस्टार हाउस बोट्स की भव्यता को हमने यहां नजदीक से देखा। आगे फैन्सी बाजार है। हमने वहां जाने से भी मना कर दिया। हम सीधे नेहरु गार्डन में जाकर उतरे। नेहरु गार्डन में आज विशेष भीड़ है। पता लगा आज राजीव गांधी का जन्म दिन है और उसी उपलक्ष में यहां विभिन्न प्रकार की बोट रेस आयोजित की जा रही है। सारी झील में रंग बिरंगे झंडे लहरा रहे हैं। कई टीमें अपनी नौकाओं में अपनी विशेष पोषाक के साथ हाथों में पतवार लिये सन्नद्ध खड़ी है। खेल प्रतियोगिता का उद्घाटन करने खेलमंत्री तथा बहुत से वी.आई.पी. आ रहे हैं। जासूसी कुत्तों के साथ पुलिस व कमांडो की कड़ी सुरक्षा व्यवस्था है। बाग में कई जगहों पर जाने पर रोक लगी हुई है। पर्यटकों को देखते ही फोटोग्राफर आ जुटे। बहिन व कुंवर सा. ने कश्मीरी वस्त्र पहन कर फोटो खिंचवाये। डल झील के बीच हरे भरे नेहरु पार्क में भी हमें श्रीनगर की दोपहर बारह बजे की धूप सहन नहीं हो पाई। यहां पर बैठने की कोई छायादार जगह खाली नहीं है। हमारा नाव वाला भी किनारे चलने के लिये तकाजा कर रहा है। कोई आध घंटा पार्क में बिताकर हम किनारे लौटे। हमारी शिकारा यात्रा दो घंटे से भी कम समय की हुई जबकि हमने तीन घंटे की तो शिकारावाले से बात ही की थी। शिकाराचालक ने तय राशि के अतिरिक्त इनाम भी वसूल किया।

डल झील के किनारे खड़े रह हम नौका दौड़ शुरु होने का इंतजार करते रहे पर पूरे भारत की तरह यहां भी नेताओं के भाषण में समय जाया होता रहा। खिलाड़ी कोच और दर्शक धूप में तपते रहे। हमें भूख लगी थी अतः हम नौका दौड़ देखने का अरमान छोड़ नत्थू स्वीट्स पर जा बैठे। यहां निर्धारित मात्रा में दिये जाने वाले भोजन की थाली 125 रु. में मिलती है। हम उलझन में थे इतना खाना तो हम खा नहीं सकते। वेटर ने बताया कि आप थाली कम भी ले सकते हैं। हमने चारों के बीच दो थाली खाना मंगाया और वह भी बड़ी मुश्किल से खा पाये। दोनों थालियों में आलू की सब्जी तथा चावल का अधिकांश भाग मेरे को ही खाना पड़ा। बहुत दिनों बाद अच्छा खाना मिला। भोजन के बाद 15 रु. प्रति कटोरी की चार कटोरी मिठाई भी ली। अब थकान और नींद चढ़ने लगी। 20 रु. में ऑटो करके नाग मंदिर लौटे।

दो घंटे के विश्राम के बाद हम पूछताछ करते पैदल ही बस स्टैण्ड पहुंच गये। ज्यादा दूर नहीं है। यहां भी सब खाली पड़ा है। यात्री ही नहीं हैं। टैक्सी स्टैण्ड भी पास ही है। टैक्सी मिल रही है पर हमारे पास सवारियां कम है। हमने खिड़की से डीलक्स बस के टिकट लिये। टिकट पीछे की सीटों के मिले। हम इन टिकटों से असंतुष्ट थे पर कुछ ओर व्यवस्था नहीं कर पाये। वापस नाग मंदिर लौटे तो मां

व बहिन घूमने जाने के लिये तैयार मिले। कमरे से नीचे उतरते ही होटल पर तीनों ब्यालूवालों ने उड़द की दाल व रोटी खाई। बाद में हम टहलते से पैदल डल झील की ओर बढ़ते रहे। बहुत देर तक डलगेट पर बने एक लोहे के पुल के किनारे बैठ झील की रंगीनियां तथा तेज गति से बहता यातायात देखते रहे। पास ही पुलिस वाले बिना हेलमेट मोटर साइकिल चालकों का चालान कर रहे थे। कई युवा पुलिस से उलझ रहे थे, बिल्कुल हमारे यहां की तरह। कुछ देर बाद पुलिसवालों से इस पुल पर बैठे सभी लोगों को उठा दिया। यहां बैठना मना है। हम डल झील के किनारे चलने लगे अन्य हजारों लोगों की तरह। यहां भीड़ है, मजमा है और मेला सा लगा है। चूड़ियां और नकली गहने, बच्चों और महिलाओं के वस्त्र, पेन्ट–शर्ट, चादर ट्वाल और सबसे ज्यादा कश्मीरी शाल। खाने पीने की कई रेहड़ियां और ठेले। हम चलते गये और थकने पर झील की डोली पर बैठ कर आराम करते रहे। विशाल चौपाटी, पर टॉयलेट सुविधा नहीं। नल लगे हैं पर उनमें पानी नहीं आ रहा था। हमारे बायीं ओर झील, पैरों के नीचे फुटपाथ और दायीं ओर बेहद व्यस्त राजमार्ग। वाहनों के धुंयें का प्रदूषण। सड़क के पार चमचमाते होटल। अनेकों होटलों पर शुद्ध शाकाहारी के बोर्ड लगे हुये। वाकई श्रीनगर घूमना अब बहुत आसान हो गया है। हम कोई तीन किमी आगे जाकर इसी तरह तफरी करते हुये वापस नाग मंदिर आ गये। रास्ते में हमने मौसम्मी का रस पिया जिसका ठेला एक बिहारी मानुस ने लगा रखा था। कुछ फल भी खरीद कर लाये।

तीनों साथी कमरे में चले गये और मैं एक होटल में खाली सीट देखकर घुस गया। रात के साढ़े नौ बजे हैं और सारे ही ढाबों में पच्चीयां पड़ रही है। हमारे यहां की तरह ही रविवार को श्रीनगरवासी भी कुछ नया खाने पीने घर के बाहर निकलते हैं। तीन बार कहने के बाद मुझे मेरे आदेश का सादा डोसा मिल सका। होटल मालिक सफेद बाल तथा रौबीली मूंछों वाले रिटायर्ड हिन्दु फौजी के ग्राहकों के आदशों के मारे होशोहवाश गुम से हैं। नारियल की चटनी, सांभर तथा डोसे का स्वाद अच्छा था पर नमक, हरीमिर्च, प्याज, पीने का पानी नहीं मिल सका। एक और अच्छी बात यहां शिद्दत से महसूस हुई। कई मुस्लिम परिवार इन होटलों पर आकर शुद्ध शाकाहारी राजस्थानी, पंजाबी तथा दक्षिण भारतीय खाना खा रहे हैं। एक युवा कश्मीरी इस होटल मालिक से बहुत नाराज हो कर गया है। वह आर्डर देकर आध पौन घंटे से खाना लगने का इंतजार कर रहा था, अब उसे बताया गया कि खाना समाप्त हो गया है ; उसका आर्डर पूरा नहीं किया जा सकेगा। उस परिवार का तो रविवार ही खराब हो गया और छोटे बच्चे भूख से कुलबुला रहे हैं। खाने के लिये तुरंत भी तो मना किया जा सकता था। मैंने अपना बिल देने के लिये तीस रु. दिये तो मुझे दो रु. खुल्ले नहीं हैं, बाद में देख लेंगें कह कर चलता किया गया। अब बाद तो पता नहीं कब आयेगा। मैं नागमंदिर विश्रामगृह अपने कमरे में पहुंचा। आज हमारे पास न तो कोई काम है और न कोई बातें। जल्द ही सो गये।

स्वर्ग से वापसी

ता.20–8–2007 सोमवार प्रातः जल्दी उठ नहा–धो कमरा खाली कर नीचे आये। मैनेजर को बुलाकर हिसाब किया। सड़क पर प्रातः जल्दी ऑटो रिक्शा न मिलने पर कुछ दूर सामान उठा कर पैदल भी चले। यहां हमें मात्र दो सौ पचास रु. सवारी में जम्मू जाने के लिये टैक्सियां मिल रही है पर हमारे पास बस के टिकट हैं। आगे जाकर ऑटो मिला ही। हमारी बस तैयार खड़ी थी। स्थानीय सरकारी कर्मचारी एक यात्री ने हमारी खिड़की के पास वाली सीट पर कब्जा जमा रखा था जिसे हम पूरे प्रयास के बावजूद खाली नहीं करा पाये। हमारे टिकटों पर सीट नम्बर था पर बस में कहीं सीटों पर नम्बर लिखा हुआ नहीं था। वापसी यात्रा दिन की थी तथा हम सब साथ–साथ बैठे थे। पूरा रास्ता मस्ती से कश्मीर की हरियाली देखते हुये कटा। रास्ते के एक कस्बे में पर्यटन विभाग के जलपानगृह पर चालीस मिनट बस रुकी। वहां कई लोगों ने क्रिकेट के बल्ले खरीदे। जवाहर टनल से पूर्व सभी यात्रियों एवं सामानों की विशेष जांच हुई। हमारी बस में तीन विदेशी भी सफर कर रहे थे उनके दस्तावेजों की जांच में ज्यादा समय लगा। रामबन में एक मुस्लिम ढाबे के सामने खाने के लिये बस रोकी गई। मैंने कुछ आगे बढ़कर

शाकाहारी भोजनालय ढूंढा। बिना प्याज लहसुन की दाल व दही से तंदूरी रोटियां खाई। भोजन बहुत सस्ता दिया गया। जम्मु से कुछ पहले ही एक बार पुनः नाश्ते के लिये बस रुकी। आगे बहिन को पेट दर्द के कारण बड़ी तकलीफ हुई और कुंवर सा. के साथ उसे रास्ते में पीने के पानी की बोतल लेकर उतरना पड़ा। हम जम्मु शहर पहुंच गये थे मैंने उन्हें अग्रवाल धर्मशाला में मिलने के लिये कह दिया था। मैं गलतफहमी में तथा बस चालक व कंडक्टर को समझाने में असफल रहने के कारण रेल्वे स्टेशन के पास सबसे अंत में बस से उतरा। जब तक सारी सवारियां उतर चुकी थी। मैंने मां के साथ हमारा आठ नग सामान बस से उतारा एवं पचास रु. में ऑटो कर अग्रवाल धर्मशाला पहुंचा। वहां कुंवर सा. व बहिन हमारा इंतजार कर रहे थे। वे जहां उतरे थे वहां से धर्मशाला का पैदल का ही रास्ता है।

अग्रवाल धर्मशाला

अग्रवाल धर्मशाला में भी सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम हैं। हमने मैनेजर के पास जाकर रुकने की व्यवस्था के बारे में जानकारी ली। तल मंजिल में हॉल में पांच रु. सवारी में कहीं भी सोयें। प्रथम मंजिल पर कमरे भी हैं तथा एक बड़े हॉल में डोरमेट्री है। वातानूकूलित कमरा मात्र 250 रु. में है। हमने एक कमरा खुलवा लिया। दो अतिरिक्त व्यक्तियों के 50 रु. प्रति से सौ रु. अलग दे दिये। मेरा सोच था कि दो जने डोरमेट्री के पलंगों पर जाकर सो जायेंगे पर बाद में हमें वहां नहीं सोने दिया गया। इतना अच्छा कमरा होटल में 700–800 रु. से कम में नहीं मिलता। धर्मशाला में सफाई की व्यवस्था बहुत अच्छी है। ध र्मशाला बाजार में है, यहां से बस स्टैण्ड व रघुनाथ मंदिर पैदल के रास्ते पर ही है।

हमें आज खाना नहीं लेना है। सफर में दिनभर से कुछ न कुछ खाते ही रहे हैं। फिर बचा हुआ नाश्ता भी खत्म करना है। कुछ देर में तरोताजा हो हम खरीददारी के हिसाब से बाजार में आ गये। कुछ दुकानों पर अखरोट व चिलगोजा के भाव किये। अखरोट में अकसर यहां धोखा होता है। मैंने अखरोट गिरी तलाश की जो थैली पैकिंग में आती है। पास ही 'अमृतसरियां दी हट्टी' दिखाई दी। मुंह में पानी आ गया। सागारी मिठाई खाई तथा दही की लस्सी पी। दुकानदार ने बताया कि अमरनाथ जी में मिलने वाला प्रसाद हम ही बना कर भेजते हैं। इस दुकान में शुद्ध देशी घी या रिफाइंड मुंगफली के तेल का ही प्रयोग होता है। प्याज लहसुन कहीं काम में नहीं लिया जाता। हमें और क्या चाहिये? तय कर लिया कि कल नाश्ता यहीं करेंगें। रघुनाथ मंदिर में आरती दर्शन करने गये। वहां से आने के बाद अखरोटगिरी, खुबानी व बादाम के डिब्बे खरीदते हुये धर्मशाला आ गये।

सुविधा की दृष्टि से मैं व मां डोरमेट्री में खाली पलंगों पर जा सोये। रात ग्यारह बजे चौकीदार ने हमें जगाकर वापस कमरे में भेजा। दो अतिरिक्त बिस्तर दिये गये। थोड़ी सी लिखाने में चूक हो गई। पैसा बराबर ही लगा। हमने सिर्फ कमरे की ही रसीद कटवाई थी, डोरमेट्री के पलंग के नम्बर नहीं लिये थे। कुंवर सा. व बहिन ने हमें पूरा सम्मान देते हुये पलंग पर सुलाया एवं स्वयं नीचे बिछे गदेलों पर सोये। डनलप के गदेले, डबल बेड का पलंग, मोटे नर्म तकिये, पंखे–कूलर से शीतल कमरा, साफ सफाई, मद्धिम रोशनी और बिल्कुल शांत वातावरण। सब कुछ होते हुये भी मुझे रात में अच्छी नींद नहीं आई।

तारीख 21 अगस्त 2007 मंगलवार अलसाये देरी से उठे। हमारे कमरे में शौचालय में पश्चिमी सभ्यता वाली सीट लगी थी जो हम चारों के लिये असुविधाजनक थी। धर्मशाला में कोई भीड़ नहीं है अतः हमने बाहर के शौचालयों का प्रयोग किया। बहुत सारे कपड़े धोये जिन्हें छत पर ले जा कर सुखाया। ध र्मशाला की उÿची छत से जम्मू शहर बहुत अच्छा लग रहा था। नौ बजे हमने रघुनाथ मंदिर दर्शन किये और फिर अमृतसरियां दी हट्टी पर भरपेट नाश्ता किया। रास्ते में सफर के लिये भी खाना पैक करवा लिया। वापस धर्मशाला में आ पैकिंग की और ऑटो रिक्शा कर रेल्वे स्टेशन आ गये। चार सवारी के लिये एक ही ऑटो करने में दिक्कत आई। ऑटो चालकों को चालान का भय रहता है। हमारे पास समय बहुत है, अतः टहलते से सारा सामान स्वयं ही हाथों में उठाये प्लेटफार्म पर गाड़ी के अपने डिब्बें में हमारी आरक्षित शायिकाओं पर आ बैठे। यहां दोपहर ग्यारह बजे हमारा डिब्बा धूप में तप रहा था और हम उसमें बैठे ऑवन की तरह सिक रहे थे। एसी का टिकट लेने की बात फिर चली पर बस बात ही रह गई।

दिन भर हंसते खेलते खाते यात्रा हुई। कुंवर सा. ने रास्ते में सब नाश्ता एवं खाना समाप्त कर मुझे खाली थैलियां बता दी।

यात्रा के बाद

हम ता. 22–7–07 बुधवार सुबह चार बजे कोटा उतरे। कुंवर सा. व बहिन जी ऑटो कर उनके घ ार चले गये। उनके बहुत आग्रह के बावजूद हम कोटा नहीं रुके और बस में बैठ बारां आ गये। हमारे पारिवारिक मित्र पुरुषोत्तमजी का परिवार भी संयोगवश आज ही त्रम्बकेश्वर की यात्रा से लौटा है। हमने कोटा से बारां तक का सफर साथ ही तय किया। हमें लेने छोटा भाई रामू बस पर आ गया था। नौ बजते–बजते हम घर पहुंच गये।

यात्रा पूरी होने के बाद मां के हाथ पर बारां में दो बार और प्लास्तर चढ़वाना पड़ा। कुंवर सा. ने भी जांचें करवाई। उन्हें शुगर बहुत ज्यादा (दो सौ दस) निकली जो उन्होंने बिना दवा खाये मात्र परहेज और व्यायाम से ठीक की। हमारे नाक गाल पर जमी पपड़ी बारां आने के बाद अपने आप ठीक हो गई। मेरा पेट बहुत दिनों तक दवाइयां खाने एवं परहेज रखने के बाद ठीक हो सका। हमारे अधिकांश फोटो खराब हो गये। शेषनाग के यादगार क्षणों की तो एक भी तस्वीर नहीं बन पाई। हमने इतना विचार कर सामान रखा था फिर भी हमारे पास कोई पंद्रह किलो सामान ज्यादा था। जैसे दो जोड़ी जूते चप्पल, दो किलो साबुन, दो मोटी डबल बैड की चादरें और बहुत सारा नाश्ता। सामान कम होता तो हमें श्रम एवं मजदूरी में बचत हो सकती थी।